

प्रश्न: अपने बारे में शुरुआत से बताइए।

उत्तर: मेरा नाम लता सिंह है और मैं जौनपुर की रहने वाली हूँ। जिला जौनपुर है लेकिन मायका कराराकात क्षेत्र में पड़ता है। माँ-बाप थे, चाचा-चाची थे उस परिवार में जन्म हुआ। मेरी शादी भी जौनपुर ज़िले में दूसरे क्षेत्र में हुई। हमारे जीवन में सब कुछ बहुत सही चल रहा था। हमारे ससुर तीन भाई थे, जमीन जायदाद काफ़ी थी। उन्होंने बीस एकड़ ज़मीन बड़े भाई के पाँच बच्चों को दे दिया और अपने बच्चों को बताया नहीं। इस मामले में घर में थोड़ा विरोध हुआ, कोई अपने माँ बाप को जवाब दे नहीं पाया और घर छोड़ दिया। बीच के ससुर को लड़के और हम लोगों ने घर छोड़ दिया।

अगर यह विवाद नहीं होता तो हम लोग घर से निकलते ही नहीं, क्योंकि हम लोग खेती के बिजनेस वाले हैं। उस समय जब हम यहाँ पर आए तो एक चादर भी लेकर नहीं आए थे। नोएडा के अंदर हमारी ज़िंदगी संघर्ष में ही बीती।

प्रश्न: आप लोग जब आए तब नोएडा आने का डिजीजन किसका था? पति का...

उत्तर: ...पति का था और हमारे देवर का था। पति हमारे थोड़े गुस्सैल हैं पर सीधे हैं, उन्होंने कहा कि निकल जाइए वरना कुछ हो जाएगा। हमारे ससुर नहीं चाहते थे कि हम लोग आएँ या कोई उनके भाई का विरोध करे। बीस एकड़ का मतलब हमारे यहाँ होता है... बीस बिस्से का एक बीघा होता है। बहुत ज़मीन थी। शायद वह ज़मीन रही होती तो हम लोग बाहर नहीं निकलते।

हमारी एक फुफुआ सास थी उनके लड़के सेक्टर 12 में थे। वह टेलीफोन एक्सचेंज में जे ई थे। उन्होंने हमें बुला लिया तो हम लोग यहाँ आए। कुछ दिन बाद इस कम्पनी में.. उन्होंने ही कहा कि घर में बैठकर क्या करोगे तुम लोग। एक कम्पनी सेक्टर 2 में केमिकल की थी साची फाइमिल्स उसमें हसबैंड लगे और फीनिक्स में हम लगे।

प्रश्न- आप के परिवार के और लोग भी आए थे साथ में, मतलब आपके देवर या रिश्तेदार?

उत्तर- रिश्तेदार वाले थे पहले से जे ई थे टेलीफोन एक्सचेंज में।

प्रश्न- फिनिक्स में आपने कब शुरुआत किया?

उत्तर- हमने 89 में शुरुआत किया, ऐसे किया के, हमारे जो जेठ थे फुवा के लड़के के फिनिक्स के मालिक से काफ़ी दोस्ती थी, तो फिनिक्स में ज्वाइन करवाया मुझे, फिनिक्स में गंगेश्वर दत्त शर्मा जी हैं पहले से काम कर रहे थे, 16/17 साल की उम्र रही होगी उनकी, तब मालिक ने उन्हें निकल दिया।

प्रश्न- तब आपकी उम्र की रही होगी उस वक़्त??

उत्तर- 25 या 26 साल तो रही होगी, उससे तो कम नहीं रही होगी..

प्रश्न- तब बच्चे भी थे आपके?

उत्तर - हाँ दो बच्चे थे, छोटे छोटे, बच्चे गाँव में ही पैदा हुए थे, छोटे छोटे थे।

प्रश्न- तब आपको अलग से कुछ कम सीखना पड़ा था, या, नहीं

उत्तर- मुझे कुछ काम सीखना नहीं पड़ा था, और न मैं देखी थी के कैसे कंपनियाँ चलती हैं और कैसे जूते सिलते, कैसे जूते बनते हैं कैसे जूतों की फुल फाइनल तैयार होता है, मगर उस कंपनी में देखते देखते मेरे को कुछ ज्यादा काम करना नहीं पड़ता था, हमें नहीं मालूम के उनके वजह से नहीं पड़ रहा है, पर हम काम करते थे, हमारा नियम था के जब काम के लिए आए हैं तो कुछ न कुछ काम करेंगे, बैठना अच्छा नहीं है, तो इन लोगों को पुलिस के जरिये रिजाइन दे के निकलवा दिया।

प्रश्न- तो आप जूते का कौन-सा हिस्सा बनाते थे?

उत्तर- हम कोई भी हिस्सा कर लेते थे, कभी मशीन चला लेते थे,

प्रश्न- औरतें कितनी थीं?

उत्तर- चार सौ थीं।

प्रश्न- और टोटल एम्प्लॉय कितने रहे होंगे?

उत्तर- टोटल एप्लॉय जो चार कंपनियाँ जूते की चल रही थी, तीन से ऊपर लगभग चार हज़ार के बीच रही होगी, चारों कंपनी मिलाकर, और चार सौ औरतें रही होंगी उसमें, दूसरे यूनिट को छोड़ कर आपने यूनिट में चार सौ औरतें थीं, औरतों का प्लांट अलग था, औरतें डबल निडल चलाती थी, फुल जूता तैयार, जूता सिलाई, जूता पेस्टिंग करना, फ़ोल्ड करना, मतलब पूरा तैयार करते थे।

प्रश्न- और कभी औरतों को मर्दों के मुक़ाबले कम तनख्वाह मिलता था तो?

उत्तर- तब नोएडा के अंदर 525, 360, 300 इतनी तनख्वाहें थी महीने की, तब पीएफ़ भी नहीं था, गंगेश्वर और गंगेश्वर के साथियों को जब इन्होंने निकला, रिजाइन कराया था पुलिस को खड़ा कर के, बाहर निकल के ये लोग गाज़ियाबाद गए, सीटू की युनिन तब बनी। गंगेश्वर दत्त शर्मा सीटू की यूनियन बनाए तब मलिक बहुत परेशान करत था।

प्रश्न- अच्छा *citu* की यूनियन नहीं थी तब?

उत्तर- 88 में गंगेश्वर ज्वाइन किये 89 में यूनियन बनी है, तो ये सब छः महीने में यूनियन जीत के आई, जीत गए क्योंकि पुलिस के सामने रिजाइन लिए थे ये सब सारा कृत्य था, तब तक गंगेश्वर दत्त शर्मा से हमारा जान पहचान नहीं था।

प्रश्न- तो उन लोगों को क्यों निकला था?

उत्तर- कम्पनी मलिक ये नहीं चाहते थे कि यूनियन बने, तो इनको कहीं से भनक लगी होगी तो निकाल दिए, तो छह महीने के बाद जब ये जीतकर कंपनी आए तो इन्हें कंपनी के अन्दर नहीं आने देता था।

प्रश्न- जीत के आए, मतलब कोर्ट गए या आन्दोलन चला?

उत्तर- कोर्ट भी गए और आन्दोलन भी चला, बाकायदा जीत के आए, अन्दर एक रूम दे रखा, लेकिन उस कंपनी में तीन फ्लोर था, हजारों के लगभग थे वर्कर, वहाँ बैठ के फॉर्म भरना, लोग का आना-जाना, तब कहे के यूनियन बनाना ज़रूरी है, तब यूनियन बना, तब तक तक तो मैं लाल झंडे को जानती तक नहीं थी, तो हम कहे कि हम लाल झंडे को नहीं जानते, हमने कहा हमें यूनियन में नहीं जाना, तब कहने लगे कि नहीं आंटी इससे कुछ नहीं होता हमने कहा होने वोलने का डर तो हमें नहीं लगता, भर लिए फारम, तब यूनियन बनी, ऐसा है न मालिक इतना हरामखोर था कि मैं क्या कहूँ कामरेड, चाहे प्रेजेंट लेडी हो टोकन से बाथ रूम जाने देता था, चाहे कुछ भी हो वो सीट पे बैठे, एक आदमी लौट के आता तो दूसरा जाता, शुरू से मेरे अन्दर चिरचिरापन गुस्सैल था एक दिन क्या हुआ कि सफाई करने वाले कहीं सफाई कर रहे थे, कहीं खड़े हो कर बीडी पी रहे होंगे, देख लिया या कोई बताया होगा, क्या करा के फ्लोर के अन्दर मारा और मरने के बाद मुर्गा बना दिया, बड़ा बेशर्मी से मारा ...

प्रश्न- अच्छा तो मालिक खुद मारा?

उत्तर- उतने के अन्दर मुझे महसूस हुआ के मैं एक महीने के आई हूँ या क्या हूँ, सब सर झुका के काम करने लगे, मैं खड़ी हुई। मुझे ये नहीं लगा कि मुझे नहीं बोलना चाहिये, मैं बोली कि तुम्हारे बाप के उम्र का होगा बड़े बेशर्मा हो मार के मुर्गा बना दिया? तो देखने लगा कहा कौन है, साथ में, मेनेजर था, कहा इनको ऑफिस में बुलाया, तब मारा नहीं तब लौट के ऑफिस में चला गया कहा इनको बुलाओ, बोला इनको नौकरी पे कौन रखा, मेनेजर कहा मैं रखा हूँ, आपके कहने पे रखा, बोला ये कोई काम नहीं करेगी, ये बैठी रहेंगी, बोला इनका टेबल और कुर्सी लगा दो, मैंने बोला के क्या मेरा पैर हाँथ टूट गया है? मैं थोड़ा अंडबंड बोल देती थी, मैंने कहाँ मैं वर्कर हूँ और वर्कर के बीच में रहूँगी, अब ऐसे कामरेड लड़ाई चलने लगी, अब क्या करा के यूनियन के एक वर्कर को उपर मारा, अब उसको ले कर लड़ाई छिड़ी और इतना बेशर्मी करने लगा मालिक, उसका नाम अतुल कलसी था, मालिक का। अजय कलसी और अतुल कलसी, कमाता था बहुत ये, उन्नीस लोगों को सस्पेंड कर दिया, मैं ऑफिस पहुँची और कही कि उन्नीस लोगों में तो पहले मेरा नाम होना चाहिए था, जवाब तो मैं ने दिया और तुम मुझे मारे।

प्रश्न- और उस सारे में मर्द थे सभी...

उत्तर- नहीं उसमें दो लेडी भी थी, मैंने कहा के मेरा नाम आना चाहिए तब कंपनी चलेगी, गंगेश्वर को क्या किया के उसका ट्रान्सफर कर दिय दूसरी जगह, दूसरी यूनिट में? वर्कर नहीं चाहते थे।

प्रश्न- तब तक आप सीटू के मेम्बर बन चुकी थी ?

उत्तर- हाँ, वो गाड़ी लेकर आया, मैं गेट पर खड़ी हो गई, मैंने ने कहा तब तुम अन्दर आओगे जब गंगेश्वर दत्त शर्मा को लेके आओगे, ये मुद्दा तो नहीं हुआ ट्रान्सफर करने का, जब आपको ट्रान्सफर करना था तो पहले ही ट्रान्सफर कर देते, वो अन्दर गया, फिर गंगेश्वर को बुलाए उसका ट्रान्सफर कैंसिल किया, कामरेड फिनिक्स में संघर्ष तो बहुत चला, बाथरूम जाने का टोकन सिस्टम

भी कैंसिल कराए, कोई श्रम कानून फिनिक्स में लागू नहीं था, फिर बहुत संघर्ष हुआ, यहाँ तक संघर्ष हुआ कि छः छः महीने तक तो हम अंडरग्राउंड थे।

प्रश्न- ये सब चल रहा था फिनिक्स में तब अंडर ग्राउंड थे?

उत्तर- रहना पड़ा न, वहाँ जब संघर्ष हुआ, तो कंपनी बंद करना पड़ा, तो दूसरे कंपनी जो सेक्टर 18 वहाँ वो कमिटी बनाया था, वहाँ कंपनी के लड़को को बाहर से बंद कर के राजेंदर प्लेस से गुंडों को बुलवाकर मरवा रहा था, और कह रहा था साइन करे और कहे के मैं यूनियन में नहीं हूँ, सिर भी फुट गए थे इतना मारा, गंगेश्वर बोला क्या करे आंटी, उसको तो पास देता नहीं था, मैं एक लेडी के साथ बैंक के बहाने गई, दरवाज़ा खोला नहीं, सिक्यूरिटी गार्ड को बोला मैनेजर को बुलाओ, फिर वो आया मैंने कहा कि कमरे में लड़कों को बंद कर उसकी पिटाई कर रहे हैं। कहने लगे ऐसा नहीं है, मैंने कहा गेट तो खोल।

प्रश्न- लेकिन उनका जुर्म क्या था, यूनियन बनाना?

उत्तर- यूनियन बनाना और एक प्रेग्रेट लेडी, जिसको बाथ रूम लगा है, तब तक नहीं जाएगी जब तक दूसरी नहीं आए चाहे उसको आधा घंटा ही क्यों न हो, तब तक उसकी हालत क्या होगी! कामरेड संघर्ष हुआ कोर्ट से उसका जवाब मिला, न्याय तो मिला, क्या करा दूसरे कंपनियों में लड़ाई हुई, वहाँ भी वर्कर को मारा, क्या कहे कामरेड इतना गुस्सा आया मुझे, मैं निकली मुझे कोई नहीं जानते थे उस कंपनी में, मैं अनजान थी, मैं घुस गई उस कंपनी में और वर्कर को कहा के एक भाई मरे जाए और तुम लोग काम करो?

प्रश्न- ये दूसरी कंपनी थी या फिनिक्स का ही एक अलग यूनिट था?

उत्तर- फिनिक्स की ही दूसरी यूनिट थी, उसके चार यूनिट थे, वहाँ सिक्यूरिटी गार्ड गेट नहीं खोला, गेट टाप गए, जब वहाँ गई तो किसी का सर फूटा, पैर टूटा, गुंडे तो बेदर्द होते ही हैं, वहाँ लड़ाई खूब हुई, ऐसा हुआ के दूसरे कम्पनी (फिनिक्स से अलग कंपनी) के मजदूर भी बहार आगए, मीडिया वाले भी आगए, उसका कैमरा छीन लिया इन लोगों ने। बाद में कंपनी बंद कर दिया, कि पहले वाले वर्कर को बहार निकाल कर दूसरे वर्कर को रखेंगे, लेकिन वर्कर ऐसे थे कि अगर उनको यूनियन के तरफ़ से कह दिया जाता तो वो बात मानते थे यूनियन की, कामरेड लड़ाई चली एक साल तक, ये चार-चार बस लगाकर कोशिश करते कि वर्कर टूटे, वर्कर टूटते तो हैं, लेकिन चरों यूनिट के वर्कर थे, दिन भर हम लोग काम करते थे और रात को हमारे हस्बैंड आजाते थे।

प्रश्न- तो रात को वहाँ आप कंपनी में ही सोते थे?

उत्तर- हाँ, कुछ लड़को के साथ। हमने लड़कों को कहा कि खाना बनाओ, खाओ और वही सोवो। तो रात को 23 मार्च 1990 को चोरी से माल निकलने लगे, ... मालिक? हाँ, मालिक दोनों फ़ायरब्रिगेड में बैठे थे, उस दिन का तमाशा था के, गंगेश्वर और हम भी दोनों अपने अपने घर टीवी देखा रहे थे, मजाक में हमने कहा के कुत्ते भैक रहे रहे हैं लगता है हमारे कम्पनी में चोरी हुई, चलो घूम आते हैं, तब हम सेक्टर 22 में रहते थे। कोई 2-3 किलोमीटर रहा होगा हमारे

घर से, गए तो देखे के दूसरी कंपनी में ट्रक लगाकर माल उतार रहे हैं। स्टाफ पूरा अन्दर था और गुंडे बुला रखे थे। मैंने देखा लड़के जो सो रहे थे, उसको बुलाया, हरौला के लोग भी काफी साथ दिए थे, रात को सभी को पता चल गया सारे लोग आगए, गोली भी चल गई।

प्रश्न- गोली पुलिस चलाई थी या कोई और?

उत्तर- गुंडे चलाए थे, पुलिस इधर भी थी उधर भी थे। कामरेड वर्कर बैठ गए जब तक डीएम गाज़ियाबाद नहीं आया, पुलिस नहीं आई, गेट नहीं खुली। हमारा यही कहना था कि चोरी कर रहे थे ये, और चोरी की क्या सज़ा है ये मिले। मगर जानती ही हैं कामरेड चारों कंपनी से लोग संघर्ष किए, बड़े-बड़े गुंडे फिनिक्स में थे, आप नहीं जानेंगे मैं दादरी में बहुत बड़ा गुंडा महेन्द्र भाटी थे उनके भाई राजवीर, लोकल समझ के क्या समझ के शर्मा जी को धमका रहा था। कंपनी के अन्दर आया, बुलाया, वो भी छुट्टी के टाइम बुलाया। मैंने कहा मैं ही जाती हूँ, मैं गई तो देखी, वो गार्ड रूम में लम्बे चौड़े कुरता पहने, वो बोले तुम लेडी, तुम ही लता सिंह हो? क्या बताऊँ कामरेड मुझे गुंडों के बारे में थोड़ा भी पता नहीं था, ये गुंडे क्या होते हैं, हम जाने जैसे हम हैं वैसे सब हैं, कहा गंगेश्वर कहाँ है? हमने कहा गंगेश्वर को लेकर क्या करोगे? मैंने कहा पहले मुझ से बात कर लो फिर बुलाती हूँ, पुरी टीम ही बुलाती हूँ, आज तक मैंने औरतों वाली गाली कभी नहीं दी थी, दोनों मालिक वहीं बैठे थे, मैंने कहा इतना बत्तमीज़ मालिक है, एक लड़की का हाँथ किसी ने पकड़ लिया वो सुपरवाइजर था, तो ये मालिक बोले के ऐसे ही होगा हम मालिक हैं।

प्रश्न- तो लड़कियों के साथ छेरखानी भी होती थी?

उत्तर- नहीं कामरेड, ऐसे ही हो जाता था, तब तक राजवीर भाटी मालिक को गली देने लगे।

प्रश्न- राजवीर भाटी कौन था?

उत्तर- ये लोकल विधायक का भाई था। उसने कहा के लता सिंह आज से तुम हमारी बहन हो जहाँ जरूरत होगी तुम मुझे खड़ा पाओगे, आज से इन सालों का साथ नहीं दूँगा। अब गंगेश्वर को बुलाओ, गंगेश्वर दत्त साथ में पूरी टीम आई, गाड़ी में बैठकर सब साथ गए। क्या बात हुई उनको बैठाए गाड़ी में, हम कहे जाओ बेफिक्र हो के। एक साल बाद हम लोग जीत के आए तो चरों यूनिट कंपनी के खुलवाए।

प्रश्न- तो कोर्ट से ही जीत के आए थे..

उत्तर- हाँ कोर्ट से ही जीते थे।

प्रश्न- सीटू ही केस लड़ा था?

उत्तर- हाँ सीटू ने ही केस लड़ा। उसके महासचिव कामरेड थे, गाज़ियाबाद से के एम तिवारी दिल्ली से कामरेड भारद्वाज, मोहनलाल, और भारी टीम तो थी ही, मेरठ में केस चला, गाज़ियाबाद केस चला तो जीत के हम लोग आए तो वो कहा के लता और गंगेश्वर को हम नहीं रखेंगे।

प्रश्न- मालिक ने कहा?

उत्तर- जो वकील था, 12-1 बजे रात को हम लोग समझौता कर के आए, हमने कहा के हम तो वर्कर के लिए लड़ रहे हैं, अपने लिए तो हम लड़ नहीं रहे हैं, वहाँ पे हम गंगेश्वर इतनी बड़ी कुरबानी दिए हैं कि बता नहीं सकते। लगभग 15 महीने हम लोग कंपनी के बहार रहे, पर सीटू का इतना दहशत था कि समझिए तो हम लोग सीटू के अन्दर ही थे।

प्रश्न- आप लोग अंदर थे मतलब कुछ लोग कंपनी से बहार निकाल दिए?

उत्तर- हाँ, समझौता हो गया, चारों यूनिट चलने लगी, हम और गंगेश्वर को कहा के इनको नहीं रखेंगे, कोई नहीं कंपनी वाले वर्कर हम लोग को चाह ही रहे थे, फिर बाद में एक साल बाद हम लोगों को लिया। उसके बाद 12 साल तक कंपनी चली। 2001 तक कंपनी चली। 2001 में सेक्टर 60 में फिनिक्स का ब्रांच था, वहाँ भी वही तूफान चला। वहाँ भी यूनियन बनी और चली, अब वहाँ कम्पनी चलती रही, जेल भरो आन्दोलन हुआ, वहाँ हम लोग जेल गए, आगरे जेल गए।

प्रश्न- ये कौन-से साल की बात है?

उत्तर- ये 2002 या 2001 की बात रही होगी। वहाँ 58 लेडी रही होंगी जेल में। वो ग्रुप वाइज भेजते थे बस से एक जेल से दूसरे जेल। वहाँ टोटल 58 लेडी थी आगरे जेल में। और उस जेल में भी संघर्ष करना पड़ा, और उस जेल में एक लेडी को बच्चा भी हुआ उसने नहीं बता रखा था कि उसका नौवाँ महीना चल रहा है। 12 बजे रात को बच्चा हुआ। बाकायदा जेलर को रात को ही जेल का गेट खोलना पड़ा। रात को ही डॉक्टर को बुलाया, जेलर ने ध्यान रखी, लड्डू वड्डू बँटवाया। उस दिन जनमाष्टमी का दिन था।

प्रश्न- आदमी और औरत का इकट्ठा जेल था?

उत्तर- नहीं, आदमी और औरत का अलग अलग जेल था, चाय पीते रहिये आप उसी में बात भी होते रहेगी।

प्रश्न- जेल में और कुछ याद हो तो बताएये, अप लोगों के साथ जेल में मार पीट भी हुई?

उत्तर- आगरे में क्या हुआ कि एक टाइम का खाना आया, जब दूसरे टाइम का खाना आया तो उसमें कीड़ा था। हमने उसे पेड़ के नीचे रखवा दिया। कोई कीड़ा देख के तो खाएगा नहीं। समोसे अन्दर आता था तो हमने कहा के समोसे खा लो। बाद में छोटा जेलर अया। इत्ती तगड़ी लेडी सब थी के वहाँ भी तूफान खड़ा कर देती। जेलर थोडा बत्तमीज़ी से बोला, हमने कहा कि थोड़ा तमीज़ से बोल लो, तब तक सारी लेडी पहुँच गई। शोर मच गया तो बड़ा जेलर आया कहा के क्या बात हुई? हम बोला के खाना हम नहीं खा रहे तो इन्हें क्यों चिढ़ मच रही है, हमारे लोग नहीं खा रहे हैं। जेलर बोला नहीं खाएँगे चिढ़ तो होगी ही, पर कीड़ा वाला खाना नहीं। उस वक्त हमें भी गुस्सा बहुत आया, जेलर ने कहा के क्या खाना चाहिए? हमने कहा के दाल, चावल, रोटी, सब्जी, चोखा, सलाद... कॉपी मंगवाया लिस्ट बनवाया। कहा कि हफ्ते में दो-दो दिन बदल के खाना मिलेगा। हमने कहा के ठीक है, नहीं भी मिलेगी तो, बस नमक रोटी ही मिल जाए। कहा के 58 लेडी का खाना बाहर से आएगा, हमने कहा कि सर 58 का नहीं

आएगा 250 लेडी और हैं भले वो क्रिमिनल है पर है तो लेडी ही, सब का खाना आया। ज़च्चा के लिए लिस्ट अलग से बना उसका खाना उसका देख रेख का कम जेलर का ही था, जेलर ने ही उसका नाम भी रख दिया, उसका नाम रखा 'जेलर', उसने कहा के 12 बजे रात वो पैदा हुआ, रात में ही जेल खुलवाया ये तो कृष्ण कन्हैया है। तो कामरेड संघर्ष तो दिन में भी हुए रात में भी हुए, होते रहे। बड़े बड़े दादा गुंडे आए। कभी गेट नहीं खोलने देते थे, उस से लड़ झगड़ के हम लोग ने काम किया। वो अकेला लड़का गंगेश्वर दत्त शर्मा टिका रहा, सीटू के यूनियन काम करती रही। एक रोज हमको और गंगेश्वर दत्त शर्मा को मालिक ने अपने घर पे बुलाया, राजेंदर प्लेस में उसका घर था। साथ में जनरल मैनेजर भी था। पहले दो फ्लोर निचे ले गया, फिर ऊपर ले गया, मालिक और उसका बाप भी बैठा था। उसने तिजोरी खोल दी, बण्डल की बण्डल गड्डी पड़ी थी कहा जितना मन करे ले लो, कहा सरकारी नौकरी देंगे इसके अलावा, नोएडा में सुनील शर्मा गाड़ी देंगे। कामरेड क्या बताएँ वहां से निकलना मुश्किल था।

प्रश्न- ये घटना जेल से निकलने से पहले या उसके बाद की थी?

उत्तर- ये आगरे जेल से निकलने के बाद की घटना थी। हम वापस आए वर्करों को बताया कि पैसे से हम बिकने वाले नहीं हैं। कामरेड नॉएडा में हमने दो ही चीज़ कमाया है, पैसा नहीं कमाया, पैसा गँवाया है, पैसा हम लिए होते तो आज नॉएडा के अन्दर घूम नहीं रहे होते, आज कहीं कोई नमस्ते करता है तो मुझे पुरानी बात याद आजाती है। आज मुँह छुपाके चलते अगर हमने पैसा लिया होता तो। मगर ये लड़का 17 साल की उम्र में, मैंने एक ही बात कहा था, भाषण दे रहे थे, कि वर्कर का खून बहा देंगे वो कर देंगे सब चले गए.. मैंने कहा गलत कह रहे हैं, मैंने कहा जहाँ वर्कर का पसीना गिरेगा खून बहाएँगे हम। अरे खून बहाने से खून नहीं बहता, संघर्ष करोगे तो कुछ हासिल होगा। कामरेड फिनिक्स का संघर्ष बहुत कठिन था। यहाँ तक कि जब गोलियाँ चल रही थीं तो मैं वहीं थी। कभी इधर से कभी उधर से रात के बारह बजे। तो इस तरह फिनिक्स का संघर्ष... फिनिक्स के संघर्ष में जाएँगे तो कभी खत्म नहीं होगा इसका संघर्ष। गाड़ी जली, तीन-तीन गाड़ी जली, कंप्यूटर जली, वर्करों पे दबाव बनाने के लिए। सब काम मालिक करवाया, अपने फ़ायरब्रिगेड में बैठ के करवाया। कामरेड हमें भी बहुत गुस्सा आया, मालिक का गिरेबान पकड़े थे हम। झूठ नहीं बोलेंगे जो हमने किया जो, खींच के लाई उसे और कहा जो करवा रहे हो न, चलो तुम थाने में। कामरेड किस तरह से फँसाया गया वर्कर को। उस समय क्या था क्या नहीं था, मैं किसी से नहीं डरती थी, गुंडे आए त्रिलोक पूरी से, सभों के बीच में कहा के तुम्हारे बच्चों को उठा लेंगे तो तुम क्या करोगे। हमने कहा के हम पता दे रहे हैं जाओ तुम उठा लो बच्चे को, सारे बच्चे तो हमारें हैं।

प्रश्न- तब क्या उम्र रही होगी आपके बच्चों की ?

उत्तर- आठ दिन खिलाया पिलाया पड़ोसी ने तब ये इतना बड़ा था।

प्रश्न -तब आप जेल में ही थीं?

उत्तर- हाँ पड़ोसी खिला पिला देते थे, इतने अच्छे हमारे पड़ोसी थे, दो बच्चों को साथ में रख कर खाना खिलाना. .

प्रश्न- वो लोग भी फिनिक्स में ही थे या कहीं और थे?

उत्तर- नहीं वो लोग फिनिक्स में नहीं थे, कहीं और थे, लेकिन हम लोग उनकी लड़ाई लड़ रहे थे. .

प्रश्न- क्या लड़ाई थी उनकी?

उत्तर- एक बिराज ओवरसीज का था, उसकी लड़ाई चल रही थी। देखा वो उसकी पत्नी देखा वो लोग उसकी पत्नी नौकरी नहीं कर रहे हैं, तो हमने कहा राशन आएगा साथ में खाना बनाना, काम यहाँ करोगे तो खाने कहाँ जाओगे। राशन पानी हम देंगे यहीं खाना बनेगा। वो बेचारी हमारा घर संभालती थी। अब ऐसा हुआ के हमारे छोटे देवर की रिश्तेदारी उसी के परिवार में की। कामरेड देवरानी भी अच्छी मिली।

प्रश्न- तो आपको कभी अपने परिवार से दबाव नहीं मिला?

उत्तर- नहीं कभी नहीं मिला। वो 12 सेक्टर वाले हमारे बड़े जेठ थे उनके यहाँ मालिक पहुँचा। एक गाड़ी उस वक्त महंगी थी। गाड़ी ये गंगेश्वर दत्त शर्मा के लिए है। बड़े लोग में बड़ी बात होती है। गाड़ी ले लो और ये यूनियन का काम बंद कर दो। हमारे जेठ ये सब बातें नहीं बोले हमें और हमें वहाँ बुला लिए। तो मैं मुँह ढहकती थी। पुरी बात सुनी। वो कहें के तुम्हें यूनियन छोड़ना पड़ेगा, नौकरी हमने दिलवाई थी। हमने कहा कि नौकरी तो आपने दिलवाई थी लेकिन संघर्ष हमने किया है। मजदूरों का शोषण आपने देखा नहीं है, मैं उनका शोषण सह नहीं सकती। ना मुझे कुछ चाहिए और न ही गंगेश्वर को गाड़ी चाहिए। हम घर छोड़ देंगे पर यूनियन नहीं छोड़ेंगे, आप अपने भाई बच्चों को ले जाइए पर मैं यूनियन नहीं छोड़ूंगी। वो बोले ये कर देंगे, वो कर देंगे, बोले के तुमको मरवा के फेंकवा भी देंगे। मैंने कहा के मैं घर छोड़ दूँगी पर यूनियन नहीं छोड़ूंगी। जब मैं घर से बाहर निकली तो देखा अतुल कलसी घर पे ही बैठा है। वो मंदिर जा कर हम लोगों को परेशान करता था। यहाँ तक गिर गया कामरेड, फुल स्टाफ, मेनेजर से लेके सब 12 सेक्टर में खड़े थे। मैं आरही थी कामरेड, पहले ही रोककर मेरे हस्बैंड को बुलाया और कहा एक बात कहूँ भाई साहब मैं नहीं सारे मजदूर कह रहे हैं, लता सिंह रात में मजदूरों के बीच में सोती है, इससे बेइज्जती होती। मैं तो कुछ देर के लिए सोंचने लगी क्या सोंचेंगे ये, कि कितना भी विश्वास हो पर कोई थोड़े समय क लिए तो सोंचेगा ही। मैं सोंची इतना बड़ा कलंक लगाया है मेरे उपर पर मैं सोंची कि रात को बहार भी निकलती हूँ तो भी ये मेरे साथ होते हैं। मेरे हसबैंड आए और बोले तुम संघर्ष करो मैं तुम्हारे साथ हूँ, घर का टेंशन मत लो, मजदूरों के लिए लड़ाई लड़ रही हो तो मैं मना नहीं करूँगा। मैं इतनी दूर खड़ी थी, वो बोले कि हाँ नाँएडा हँस रहा है पर मैं नहीं हँस रहा हूँ। माँ अगर बच्चों के साथ नहीं सोएगी तो किसके साथ सोएगी, वो माँ हैं न उन बच्चों की, वो तो माँ ही बुलाते हैं। जब मुझे ऑब्जेक्शन नहीं है तो आप को क्या है। वहाँ से उन सब का इतना बड़ा मुँह बन गया। मैं तो दूर अलग काँप रही थी, वो आए और कहने लगे

के तुम काँप क्यों रही हो। वहाँ से स्टाफ़ देख रहा है हमें, तो तब मैंने पूछा के प्यार क्या चीज़ होती है, कह कि शाम में बताऊँगा। एक बार मेरे हसबैंड बोले जब मैं नौकरी ज्वाइन कर रही थी तो उन्होंने कहा कि एक अंजना आदमी अगर चाय पिला रहा है तो समझो के वो आदमी ये क्यों पिला रहा है, तब चाय पीना। कामरेड ये मैंने गाँठ बाँध लिया था। फिनिक्स की ऐसी-ऐसी घटना थी, मगर फिनिक्स का मैंने ये कुरबानी दिया के मालिक लिख कर के दे रहा था के लता सिंह जब तक जिंदा रहेगी ये यूनिट रहेगा और इनकी नौकरी पक्की रहेगी। मैंने ये कहा के मुझे नहीं चाहिए, मुझे मजदूरों की मजदूरी चाहिए, हम उसी में खुश हैं।

प्रश्न- वहाँ औरतों को आपने संगठित किया उसका थोड़ा बताइये. .

उत्तर- हमारी महिलाओं ने कितना संघर्ष किया, क्या बताएँ कामरेड। दिल्ली में भी इसकी वजह से किसी के पैर टूटे, क्या-क्या नहीं हुआ। वो नाला देख रही हैं न वहाँ भी वर्कर्स ने कूद-कूद के जान बचाई जब गोली चली तो। ये नॉएडा में जो अरचार परचार देख रहे हैं न वो पहले महिलाएँ ही करती थीं। जैसे 25 को तरीख आरही है हम तो प्रचार करते ही हैं। पहले बहुत महिलाएँ ही थीं। 60 में भी महिलाएँ ही थीं इनके चारों यूनिट में महिला। 1200 महिलाएँ थीं टोटल तो 2000 रही होंगी, तब हमारी महिलाएँ काफी संघर्षशील भी थी। अब कहाँ कहाँ बिखर गए, पर अब भी उनको काम पड़ता है तो ऑफिस आती हैं। अब ज्यादा हम भूल रहे हों फिनिक्स के बारे में तो शर्मा जी आपको बताएँगे।

प्रश्न- तो आप लोगों के यूनियन मीटिंग कहाँ हुआ करती थी?

उत्तर- यूनियन की मीटिंग कभी 8 पार्क, शिमला पार्क, जब किसी वर्कर को निकाल देता था तो हम गेट पे ही गेट मीटिंग किया करते थे।

प्रश्न- उसमें आदमी, औरत सभी होते थे?

उत्तर- हाँ, सभी लोग होते थे।

प्रश्न- वहाँ बोलते भी थे औरतें?

उत्तर - हाँ हाँ, यही तो ट्रेड यूनियन में मिला है औरतों को, इज्जत सम्मान। कामरेड मेरा परिवार रोका नहीं और मैं इज्जत और सम्मान के लिए ही सीटू छोड़ा नहीं। बस ऐसे ही बना रहे और सब चला जाएगा। परिवार को भी लगे कि हम जहाँ भी जाए (जिस भी पार्टी में) तुम वहीं रहो, संघर्ष से पली बढ़ी हो, कोई पार्टी वाला आए कहे के तुम ठाकुर की लड़की हो? आप संघर्ष को ये कह रही हैं, इसके बार फिर 97 में हड़ताल हुआ पुरे नॉएडा का, तहलका मच गया, पेपर में छपी के आठ घंटे पूरा नॉएडा सीटू के अन्दर रहा। उस समय भी रासुका की माँग हुई, उस समय हमारी लेडी जो थी राजकुमारी उसको पुलिस रात को गिरफ्तार करी, जो हमारी केस चली, कामरेड कीर्ति ने केस लड़ा सुप्रीम कोर्ट में। पुलिस वाले जो थे वो आने लगे, पैर पकड़ने लगे कि हमारे छोटे-छोटे बच्चे हैं नौकरी चली जाएगी तो क्या करेंगे। कैसे-कैसे उसकी नौकरी बची, रासुका की माँग उस वक्त हम लोग पे हुई। उस वक्त एक दरोगा की नौकरी चली जाती क्योंकि थाने के अन्दर हम अकेले थे, मर्द सब बाहर थे। तब कांग्रेस की सरकार थी, सैकड़ों

नहीं हजारों की तादाद में कंपनी के मालिक उसके परिवार के लोग सेक्टर 20 की सड़क को जाम कर धरने पे बैठे थे। पुरे आठ घंटे कंपनी हमारे हाथ में रही, जिस कंपनी में यूनियन हमारे नहीं थे वहाँ से भी वर्कर निकल आए, तो एक ही नारा दे रहे थे, वो गलत नारा दे रहे थे। उस समय इन्दर कुमार गुजराल के रिश्तेदार की कंपनी थी वहाँ से भी वर्कर निकल गए, तो सीटू का जो संघर्ष है, आज भी मालूम पड़ता है, सीटू की जो यूनियन बन गई लोग आज भी उत्साहित हो जाते हैं। योदी और मोदी की सरकार मजदूरों को बर्बाद करने पे तुली है, हम लोग संघर्ष की तैयारी में जुटे हैं, ये जो चार लेबर कोड है उसको निरस्त करने के लिए, 25 तारिख को हड़ताल है देखो आगे क्या होता है।

प्रश्न- तो आप पूरा एक साल जो जेल गई थी, उसके बाद कभी जेल या अंडर ग्राउंड हुई हैं?
उत्तर- नहीं, एक साल नहीं, एक महिना दो दिन, अंडर ग्राउंड तो थे ही, 2013 में। हमें तो ये लोग मरा घोषित कर दिए थे, जब पुलिस लगी छान बीन करने तो अंडर ग्राउंड ही समझिए। 2013 में, 1997 में, अभी सब की हाजरी लग रही है कोर्ट में। केस तो हम लोगों के ऊपर लग नहीं पाई, यहाँ तक के पूछता था के लता सिंह का मकान कौन-सा है और आशा यादव, आशा यादव को जान रही हैं न आप? उन महिलाओं की भी महिला पुलिस पिटाई करती थी, तुम पुलिस को पता नहीं कहाँ माकन है खान नहीं है?? केस तो चले, दिल्ली में अभी भी तारीख चल रही है, पर हम लोग पे आज भी केस नहीं है, वैसे तो केस काफी हैं, सजाए के तौर पर भी हम गंगेश्वर ही थे, अब तो बाकी की बात आगे गंगेश्वर,

प्रश्न- नहीं-नहीं थोड़ा-सा और बताइए, कुछ जीजें और बताइए। ये बताइए कि जब फिनिक्स का काम बंद हो गया तो उसके बाद आपने क्या किया?

उत्तर- हमने ऐसा किया कामरेड, मेरा पहला स्थान फिनिक्स था और अंतिम स्थान फिनिक्स रहा, कोई दूसरा स्थान जाने लायक है ही नहीं कामरेड। किसी कंपनी में जाएँगे हम तो हमारा हर जगह मौजूद होगा रिकॉर्ड, फोटो, कौन-सा थाना ऐसा नहीं जिसमें हमारे खिलाफ़ कुछ रिकॉर्ड न हो। हम क्या गंगेश्वर दत्त शर्मा भी कहीं नहीं गए, बहुत दिन बाद वो सीटू ऑफिस में होलटाइमर रहे वो, मैं कहीं होलटाइमर नहीं रही,

प्रश्न - पति ही आपका अकेला कमाने वाला रहा?

उत्तर- हाँ पति ही अकेला कमाने वाला रहा, उनकी कंपनी का मालिक बहोत अच्छा था। एक तरफ हम अपने मालिक से संघर्ष कर रहे थे, दूसरा उनका मालिक था, इतना अच्छा, मुझे कभी कुछ कहा नहीं। हाँ एक बार मुझे बुलाया था, और पूछा क्या कुछ चला रहा है और क्यों ऐसा हो रहा है कंपनी में, तुम्हारे कंपनी में। सुना और बोला के इन सालों का कोई साथ नहीं देगा, जाओ। तो उस मालिक ने भी साथ दिया हस्बैंड का और उस मालिक तक ही बात खतम हो गए। सुगर के मरीज थे, दो साल हो गए गुजरे, बेटा है अब उनका, रिटायरमेंट हो गया अक्टूबर में। अब वो कह कह रहा है नहीं छोड़ेंगे आपको, आप बैठे रहिए...

प्रश्न- वहाँ जाति के आधार पर मजदूरों में आपसी विभेद रहता था?

उत्तर- हाँ, हाँ रहता जाति था, तुम ठाकुर हो, पंडित हो, तुम मुस्लमान हो, पर हम लोगों के यहाँ नहीं था। सभी का खाना एक साथ बनता था, एक साथ रहते खाते थे, मीटिंग करते थे तो साथ में करते थे, हम वर्करों को समझाते रहते थे, चार गेट तो है नहीं, अगर चार गेट हैं भी तो मालिक वोकर्सों को बाँटते हैं, अपने नहीं बाँटते, क्योंकि जब थाने पे लडाई हुई थी तो जूते की कंपनी है सेक्टर 20 में वहाँ मीडिया के सभी लोग इकट्ठे हुए पुलिस आई, गाज़ियाबाद एसपी भी था। मीडिया वाले मुझे समझाने लगे, तुम बड़े घर की हो, इतना अच्छा खानदान है, क्यों तुम इन चमारों के साथ पड़ी हो। मैं सुनती गई, सुनती गई, मुझे गुस्सा आगया (मेरी ये कमी है गुस्सा आजाता है जल्द ही), पट से जो मालिक खड़ा था उसको हमने पकड़ लिया और जो समझा रहा था उसको पकड़ लिया हमने। पाण्डेय था वो, सब ताकने लगा, दोनों का हाथ पकड़ के हमने कहा, ये मुस्लमान है और तुम पंडित हो, जाति वाती कुछ नहीं होती, तुम मालिक हो और ये सब वर्कर है, सारे वर्कर सब देखने लगे, बोला हमने वर्कर में सारे है, चमार भी हैं मुस्लमान भी हैं, पंडित भी हैं, ठाकुर, पासी सब हैं। मैं तो नहीं जानती मैं किस जाति की हूँ, किस घर की बेटी हूँ, किस घर की बहूँ हूँ। मैं तो बस जानती हूँ कि मैं मजदूर हूँ, बस मैं रोड पे हूँ, कामरेड इससे हमारे मजदूरों का विश्वास बढ़ा, आज भी विश्वास टिका हुआ है। लेकिन ये बीजेपी की सरकार मौत के घाट पे उतारने वाली है। एक कमाने वाला जिसकी तनखाह आठ हज़ार है, आज आठ हज़ार में एक वर्कर नॉएडा के अन्दर क्या कर सकती है, तो उसमे भी एक छुट्टी करेंगे डेढ़ दिन का पैसा कट लेगा, मतलब दहशत है मजदूरों के अन्दर तो। बस यही है कामरेड अब आप गंगेश्वर दत्त शर्मा से पूछ लीजिए मैं सुगर की भी मरीज़ हूँ और BP की भी मरीज़ हूँ, सेक्टर 22 में झुग्गी झोपडी थी मैं उस माकन मालिक का भी धन्वाद देना चाहूँगी जो हम लोग के संघर्ष में काफी साथ दिए। अब वो नहीं रहे, उन्होंने कहा के इन बच्चों को हम देखेंगे, तू जा नौकरी कर। उन्होंने साथ ये दिया कि एक मुसलमान यहीं पास के गाँव का था जिसकी तीन गाड़ियाँ जली थीं तो उसने मालिक से मिल के हमारे और गंगेश्वर के नाम से एक रिपोर्ट करवा दिया, वारंट भी निकली थी, हाँ 5-6 पुलिस पकड़ने गई घर। मैं तैयार ही हो रही थी, तो जिसकी गाड़ी जली थी उस बाप बुढ़ा जो हमारे हस्बैंड को बहुत मानता था, तो हमें नहीं मालूम कि इन लोगों की जन पहचान है, जब पुलिस आवाज़ लगाई कि लता सिंह यहाँ रहती है, तो इतने में हमारे हस्बैंड निकल गए और बोले के हाँ लता सिंह यहाँ रहती है, क्या बात है?? तब ले गाड़ी मालिक निकला और बोला के अरे बेटा तुम यहीं रहते हो लता सिंह तुम्हारी पत्नी है। मैं निकल कर बाहर आई, कहा कि बेटा गाड़ी क्यों जलवाया आपने, आप वर्करों के मालिक है, हमने कहा हम वर्करों के मालिक नहीं है, मालिक तो वो है, कहा उसने मतलब?? हमने कहा चाचा आपको लगता है के गाड़ी हमने जलवाई?? और शर्मा जी यहीं के लोकल आदमी हैं और वो बच्चा है इतनी हिम्मत हो गई है कि वो गाड़ी जलवाएगा। हाँ वो कहने लगे के बेटा तुम सही कह रहे हो, मैंने कहा चाचा पहले जाओ थाने में और जाके देखो कि पहले रिपोर्ट उसने करवाया है या हमने, अगर रिपोर्ट हमने पहले करवाई है तो इनको कहो कि पहले जाए अजय कलसी और अतुल कलसी को जा के पकड़ के लाए और डाले उसको जेल में, और हम बिना बुलाए जेल में जाएँगे।

प्रश्न- तो वहाँ पे लगभग वर्कर्स ही रहते थे आसपास के मकानों में??

उत्तर- हाँ चार छ वहाँ छलेरा, बारोला यहाँ वहाँ सब रहते थे, पहले मोबाइल तो था नहीं, एक से एक साइकिल ले के उड़ जाते थे फर फर, तो ऐसे ही जमा हो जाते थे सब, आजकल तो बहाने ही कर लेते हैं के मैं यहाँ नहीं वहाँ हूँ। तब तो पहले सीधे घर पे ही मिल जाते थे। कामरेड यही

था कि इससमे जेल जाने से बचे हम, एक बार पुलिस यहाँ आई इसी सीटू ऑफिस में चारों तरफ से घेर लिया।

प्रश्न- ये ऑफिस कब बना है??

उत्तर- फिनिक्स में संघर्ष चल रहा था, तभी ये बना था यहीं, पहले वो उधर था, अच्छा, ये जनवादी लेखक संघ की उपाध्यक्ष है (ये बात चीत के दौरान आगई थी), क्रोना काल में इनके हस्बैंड गुज़र गए। तो कामरेड क्या कह रही थीं... पुलिस वाला आगया... हाँ उसमें से एक पुलिस वाला जानता था मुझे, तो वो बोला, लता सिंह कहाँ मिलेंगे? मैंने कहा क्या काम है लता सिंह से, उसने इशारा कर दिया वारंट है! हमने कहा दे सकते हैं आप वारंट, कहा कि दे नहीं सकते दिखा सकता हूँ। मैंने हँसते हुए कहा कि बैठिये आप हम लता सिंह को बुला के लाते हैं, तो हम श्री व्हीलर पकडे और चले आए, बाद में फ़ोन किया कि देखा पुलिस वाला ही साथ दिया और पुलिस वाला के खिलाफ़ बोलतीं हैं आप। हमने बोला साथ हमारा काम दिया पुलिस वाला नहीं दिया। तो कामरेड अब भी जीवन संघर्षमय में ही चल रहा है, अब तक का संघर्ष का जीवन तो बिता लिए, अब का संघर्ष कठिन है, कठिन ये है के साथ में परिवारिक, छोटे-छोटे बच्चे घर से निकलना भाड़ी पड़ता है। तब तो छोटे-छोटे बच्चों को निकाल के बहार चले जाते थे। अब बहुओं को लगता है दिन भर बाहर रहतीं हैं, बच्चों को कौन देखेगा, लेकिन अभी तो उनको तीन पाँच पढ़ा के हम चल देते हैं।

प्रश्न- आप की उम्र की होगी कामरेड?

उत्तर- वैसे तो नहीं मालूम हमें कि हमारी उम्र क्या होगी अभी, अंदाज़न 55 साल से कम नहीं होगा।

प्रश्न- वैसे कल फॉर्म भड़ी थी उसमे 65 ही डाला था न??

उत्तर- उम्र जितने दिन का है तो है कामरेड, कम बताने से क्या होगा, करीब नहीं 65 साल के तो हो ही गए होंगे। हम इससे अंदाज़ा लगते हैं कि हमारी बहन इतने दिन की हैं तो मैं इतनी की होंगी ही। तब तो जन्म पत्री जन्म प्रमाण पत्र माँ बाप तो बनवाते ही नहीं थे, तो आप पूछेंगे ओरिजनल क्या है क्या नहीं। हमारी शादी 1973 में हुई थी। सन 73 में 23 मई को हुई थी तब हमारी उम्र क्या थी क्या नहीं थी।

प्रश्न: कॉमरेड आप अपने बचपन के बारे में बताइए। जौनपुर तो आप शादी के बाद आए उस से पहले....

उत्तर: जन्म तो हमारा हुआ है महाराष्ट्र में। महाराष्ट्र में हमारे सब रहते थे, फिर माँ बाप जौनपुर आ गए। बचपन हमारा ऐसे बीता कि बचपन में परिवार में तितिर बितिर हो गए और हम लोगों को पढ़ाई मे बहुत दिक्कतें आईं। मजबूरी थी। जो भी थोड़ा बहुत पढ़ लिख लिए पढ़ लिख लिए। माँ बाप घर रहने लगे। घर में ही रहते थे। चार बहनें थी, तो चार बहनों की शादी विवाह। सबसे छोटी मैं हूँ। अब तो माँ बाप रहे नहीं। लेकिन बचपन माँ बाप के साथ हँसी खुशी से बीता।

प्रश्न: आप लोग टोटल कितने भाई बहन थे?

उत्तर: चार बहन दो भाई थे।

प्रश्न: आप सबसे छोटी थीं?

उत्तर: हाँ सबसे छोटी।

प्रश्न: आपने पढ़ाई कहाँ तक की?

उत्तर: आठवीं तक पढ़ाई की।

प्रश्न: महाराष्ट्र में या जौनपुर आकर?

उत्तर: जौनपुर में।

प्रश्न: महाराष्ट्र से क्यों आना पड़ा?

उत्तर: हमारे नाना जो थे उनको तीन लड़की थी। लड़का कोई नहीं था। हमारे नाना कोतवाल थे। उनकी काफ़ी ज़मीन जायदाद थी। काफ़ी कुछ उन्होंने बना लिया था। आज भी वहाँ पर सब लोग हैं हमारा चाचा चाची लोग। मम्मी की जो बहन थी उसने हमारे चाचा से शादी कर ली। हमारे पिताजी सबसे बड़े थे तो वहाँ की प्रोपर्टी हमारे चाचा को दे दिए। हमारे पिताजी उस समय इंटर कॉलेज के मास्टर थे। तब ऐसा होता था कि अपनी नौकरी किसी को दे सकते थे तो वो अपनी नौकरी अपने भाई को दे दिए। भाई में और उनमें बहुत एकता थी। हमारी मौसी जो थी उनको 6 लड़के थे तो वहाँ की प्रोपर्टी उनको देकर गाँव की प्रोपर्टी अपने लिए ले लिए।

प्रश्न: आपके पिताजी भी खेती का काम करते थे?

उत्तर: नहीं पिताजी तो हमारे कभी कुँए से एक बाल्टी पानी भी नहीं निकाले। उनके भाई ने उनको कुछ नहीं करने दिया। पिताजी हमारे सनिचरी मिल बॉम्बे में मैनेजर थे। वहाँ स्ट्राइक हुई तो गाँव चले आए। तब हम बच्चे थे। हमारे चाचाजी कभी उनको खेत में पैर नहीं रखने दिए। हमारे पिताजी के गुज़र जाने के बाद जब तक माताजी ज़िंदा रहीं हमारे चाचा लोग अलग भी नहीं हुए। अब कोई महाराष्ट्र है, बंबई, लखनऊ है। हमारे भाई लोग जो थे... हमारे भाई लखनऊ में थे। आर्मी में कर्नल थे। गोमती नगर में उनका मकान भी है। भाई भी खत्म हो गए। मायके में बचपन तो सही ढंग से बीता।

प्रश्न: जौनपुर में आने के बाद आपके पिताजी क्या करते थे?

उत्तर: कुछ नहीं करते थे।

प्रश्न: तो घर कैसे चलता था?

उत्तर: बता तो रहे हैं न उनके भाई लोग जो थे उनको कभी कुछ करने नहीं दिए। खेत काफ़ी था तो उनको खेत में से भी प्रोफ़िट होता था। खाने पीने में या किसी चीज में कोई दिक्कत नहीं थी। शादी विवाह में चाचा चाची सब मदद करते थे। पिताजी को कोई प्रोब्लम नहीं होती थी।

प्रश्न: जैसा कि आपने पहले कहा, जब शादी होकर आप ससुराल में आए तो वहाँ ज़मीन थी आप उस समय घर में ही काम करती थीं या खेत में जाती थीं

उत्तर: अब तो ससुराल छोड़े 35 साल हो गए, अभी का बता नहीं सकती लेकिन तब बहुएँ-बेटियाँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं। हम लोगों को घर का ही काम देखना पड़ता था जैसे चौका है, बर्तन है, खाना है, पीना है, बड़ों को खाना पानी देना है, इतना ही काम था। खेती में हम लोगों को काम नहीं करना पड़ता था। आज भी हमारे यहाँ औरतें कम ही खेती में काम करती हैं।

प्रश्न: आपका काम पर निकलना पहला नोएडा में....

उत्तर: पहला हमारा काम नोएडा में... आज भी आप खेत के पास खड़ी हो जाएँगी तो आपका मन दुखी हो जाएगा, ऐसे ऐसे ज़मीन उठाकर हमारे ससुर ने... वो तो ईमादारी किए लेकिन उनके साथ बेईमानी उनका भाई किया... उनको नहीं ऐसा सोचना चाहिए था। तो... हम लोग चले आए और आने के बाद... तब नोएडा में तनख्वाह ही क्या थी। पहला मेरा कदम ये फिनिक्स था... फिर फिनिक्स से ही जनता की सेवा, वर्कर्स की सेवा में लग गए।

प्रश्न: गाँव से जब आए यहाँ तब कुछ तो दिक्कत का सामना करना पड़ा होगा?

उत्तर: दिक्कत का समाना ऐसा करना पड़ा कि हमारे हसबैंड जब आए तो किराए का कमरा भी नहीं था... तो हमारे जेठ थे... अब रिश्तेदार के यहाँ हम रह नहीं सकते थे....

तो दो तीन दिन के बाद मैंने ये कहा कि बच्चों को लेकर के रिश्तेदारी में मुझे रहना पसंद नहीं है तो एक दोस्त था उनका चौरा मोड़ पे, वहाँ कमरा लिए। मदद किए हमारे जेठ क्योंकि हम अपने घर से कुछ लेकर नहीं आए थे। तो उसी में रहने लगी। हमारे जेठ बोले कि घर में बैठ के क्या करेगी, बच्चों का एडमिशन करा देता हूँ स्कूल जाएँगे। मकान मालिक हमारा बहुत अच्छा था। बुझे थे। वो कहें के हम बच्चे देखेंगे, वो स्कूल से आएँगे तो हम देखेंगे, तुम ड्यूटी जा के करो। तो परेशानियाँ तो झेलनी पड़ीं और तो परेशानियाँ झेलने के बाद जब हम यूनियन में आए तो जनता का जो शोषण जो हो रहा था, पब्लिक और मजदूरों का, तो हमसे देखा नहीं गया, तो हम यूनियन में आ गए। हमें रिश्तेदारियाँ भी छोड़नी पड़ीं, रिश्तेदारी छुट गई हमसे। सेक्टर 12 में हमारे रिश्तेदार थे, वो हम से बड़े हैं, वो यहाँ तक कहे कि रिश्तेदारी छोड़नी पड़ेगी तुम्हें, या तो तुम रास्ता छोड़ दो, तो मैंने कहा के मैं रास्ता पकड़ ली हूँ, मजदूरों का शोषण हो रहा है तो मैं इस शोषण के खिलाफ़ लड़ूँगी लेकिन रिश्तेदारी ये सब छुट जाए, रिश्तेदारों ने भी छोड़ दिया साथ, हफ़्तों हफ़्तों पडोसियों ने हमारे बच्चों को ब्रेड और चाय बाना के दिया कामरेड। इस संघर्ष में, कामरेड हम चौबीस घंटे रहे हम इस संघर्ष में, लेकिन हमारे हसबैंड का रोले ये रहा के दिन वो ड्यूटी भी करते थे, और हमें जाना होता था तो वो हमारे साथ ही निकलते थे। हसबैंड का पूरा पूरा साथ रहा। अगर उनका विचारधारा सही नहीं होता तो ये सब नहीं हो पता। आज भी अगर मेरे बारे में कोई उनसे कहा होगा तो उनका एक ही जवाब रहा होगा, पत्नी मेरी है, और वो जो कर रही है मेरा उसको पूरा समर्थन है, मैं उसको पूरा समर्थन देता हूँ, मैं उसको पूरा इजाज़त देता हूँ। कामरेड यहाँ तक कि 1997 में यहाँ तक के पोलिस छापे मार रही थी पकड़ने के लिए। एक दिन रात में 10-15 पुलिस घुस आई घर में, जब पुलिस घुसी और पति को कहने

लगे कि कैसे पति हो तुम पत्नी कहाँ कहाँ घूम रही है तुम्हें फर्क नहीं पड़ता, तो पुलिस वाले से एक ही सवाल पूछा कि सर कहाँ हो आप? उसने कहा के मैं तुम्हें अरेस्ट करने आया हूँ, आप की बीबी कहाँ है, पोलिस वाले से हमारे पति ने पूछा, आप घर तो छोड़ के आए होंगे न पत्नी को, तो मेरी पत्नी भी कहीं होगी ऑफिस में। तो पत्नी का नंबर दो, ऑफिस का नंबर नहीं है हमारे पास। पति ने कहा, वर्करो की सेवा करती हैं तो कहीं होंगी वर्करो के साथ, ऐसे जवाब दिया पुलिस वाले को। संघर्ष हमारा ऐसा था कि जब मुझे गिरफ्तार किया गया तो..

प्रश्न: 1997 में? ये फिनिक्स का हड़ताल था या आल इंडिया हड़ताल था?

उत्तर: था तो फिनिक्स का भी वैसे आल इंडिया हड़ताल था, तो कंपनी से मैं निकल रही थी, कई थाने की पुलिस चारों तरफ से घेरे थी, तब छुट्टियाँ भी पड़ने वाली थी, तब काफी समय लग जाता छूटने में, तब कामरेड वृंदा, कामरेड मोहन, गाज़ियाबाद से तिवारी जी, सारे लोग रात में 8 बजे आए सबने कहा के सुबह नॉएडा में क्या होगा हम नहीं जानते, उस का ज़िम्मेदार तुम होंगे। कैसे क्या है ज़मानत करा के ये सब ले गए, छुट्टी बाद फिर गिरफ्तारी हुई फिर जमानत हुआ तो तब से संघर्ष में चले आ रहे हैं और आज भी हम संघर्ष में हैं।

प्रश्न: और कामरेड बाकी और सब भी औरतें तो थीं वहाँ पे?

उत्तर: कहा जाता है न सुई के नोक पर लता सिंह ही थी और एक राजकुमारी मंजू थी, राजकुमारी को रात को ही गिरफ्तार कर लिया तब हम लोगों ने एतेराज किया कि रात को क्यों गिरफ्तार किया। तब सुप्रीम का आदेश था कि पाँच बजे के बाद महिलाओं को गिरफ्तार न किया जाए, इसने रात को 12 बजे गिरफ्तार किया था तो वहीं तीन पुलिस थी एक दरोगा था, एक भी लेडीज पुलिस नहीं थी, सुप्रीम कोर्ट में केस चला, केस को कृति ने लड़ा। दोनों पुलिस वाले का ट्रान्सफर हो गया और दरोगा की नौकरी जाते जाते बची।

प्रश्न: वहाँ पे जो औरतें आई थीं काम करने वो वहीं की थी या बाहर से काम करने आई थी वहाँ?

उत्तर: नहीं कामरेड बाहर से भी थीं, बिहार से, बंगाल से, केरल से, तमिलनाडु से भी थीं, लखनऊ से भी थीं, नॉएडा से बहुत कम थीं, सोनपुर है, बनारस है वहाँ से भी थीं, लेडीज और जेंस दोनों थीं।

प्रश्न: जब सीटू की यूनियन बनी तो लेडीज और जेन्स के लिए अलग-अलग यूनिट थी या एक थी?

उत्तर: नहीं सब एक ही जगह थे, जब हमने अलग यूनिट बनाया तो उसमें कुछ कमिटीयाँ बनाई, एक कमिटी ज्वाइंट थी जिसमें हम गंगेश्वर और चार पाँच लोग थे साथ में, तो हर कंपनी में कामिटीयाँ बनीं।

प्रश्न: कभी आप ऑफिस बिअरर थीं, सेक्रेट्री या प्रेसिडेंट?

उत्तर: कामरेड ऐसा मैं कंपनी की वाइस प्रेसिडेंट, सह सचिव रही हूँ, आज भी सीटू की वाइस प्रेसिडेंट हूँ, जिला गौतम बुधनगर की, तो मैंने खुद ही प्रेसिडेंट का पद नहीं लिया। मैंने खुद ही कहा कि मुझे यूनियन चलानी है, मुझे सेवा करनी है, हमसे पढ़े लिखे लोग ज्यादा हैं वो ये पोस्ट लेंगे, बाकि हमसे जो काम करवा लो कहीं यूनियन बनवानी हो, कहीं लड़ाई झगडा हो रहा हो तो उसे सुलझाना है, सारा काम तो देख ही रहे हैं। मेरा यही काम रहा है कामरेड और हम सब

को समझाते भी हैं के यूनियन में आए हो, संगठन बनाए हो, तो पोस्ट मत देखो कि तुम प्रेसिडेंट हो या क्या हो, बस तुम्हारा काम ये होना चाहिए कि संगठन का नाम करो। महिलाओं की सुरक्षा होनी चाहिए, कामरेड मैं यही कहूँगी कि मैं ने नॉएडा के अन्दर यही कमाया है। अगर जो लालच दी गई मालिक के तरफ से, प्रसाशन के तरफ से, उसको ठुकरा के हमने मजदूरों को... उसका नतीजा ये हुआ के मैं सड़क पे, बाजार में कहीं भी चलती हूँ तो मेरा सर नहीं झुकता, लोग मुझे नमस्कार करते हैं। काम नहीं किए होते तो हमें संगठन भी नहीं पूछता, आज राह चलते हुए विरोधी संगठन मिलता है तो वो भी सम्मान से मिलते हैं।

प्रश्न: कामरेड एक घटना हुई थी न, के एक औरत टॉयलेट जा रही थी, मालिक नहीं जाने दिया तो वो वो जाते जाते रास्ते में ही टॉयलेट कर दिया?

उत्तर: नहीं, टॉयलेट तो नहीं करी पर दिक्कत तो आई महिलाओं को। वैसे तो सारी कंपनियों में समस्याएँ तो थीं पर फिनिक्स में ज्यादा थी। यहाँ टोकन सिस्टम था, एक आता था टॉयलेट से तभी दूसरे को जाना था। प्रेग्रेट लेडी थीं वो तो वह रोने लगी, शोर नहीं मचता, तो हम लोग को पता नहीं चलता, मैनेजर को नहीं पकड़ते तो हो भी सकता था। शोषण तो बहुत था कामरेड, इसपे तो काफी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं।

प्रश्न: आन्दोलन में औरतों के मुद्दे को ले कर के कंपनी या यूनियन में कभी अलग से संघर्ष किया आप लोगों ने?

उत्तर: महिलाओं के साथ बत्तमीजी से बात करने का मुद्दा उठाया गया पहले, महिलाओं के वेतन के मुद्दे को हम लोगों ने उठाया, महिलाओं को आने जाने में दिक्कत होती है और उनको सुरक्षा दिय जाए और प्रेग्रेट लेडी को छुट्टी दी जाए उसके बाद उसको बच्चों को दूध पिलाने के लिए काम के दौरान भी सुविधा दी जाए।

प्रश्न: तो कामरेड इस संघर्ष से कुछ हासिल हुआ?

उत्तर: हाँ, कामरेड इस संघर्ष से हासिल तो ज़रूर हुआ, इसी कंपनी में नहीं, नॉएडा के और भी कंपनियों में भी इसका असर हुआ, वहाँ लोग समझे और वहाँ भी लोगों ने संघर्ष किया, उनकी माँगे पूरी की गईं।

प्रश्न: आगरा जेल जब गए तो उसका साल कुछ पता है, कब गए होंगे जेल?

उत्तर: 2002 में गए थे शायद, सेटर 60 में जब फिनिक्स वर्करो को निकाल रही थी तब जेल गए हम लोग, वर्करो को चार्जशीट देकर निकाल रही थी, बहुत कष्ट दिया वर्करो को तो। तो मजदूर हम लोगों से मिले फिर हम लोगों ने उनके माँग को ले कर संघर्ष किया, उसी का बहाना बना कर हम लोगों के यूनित को बंद कर रहे हैं। हमने कहा कि क्यों यूनित को बंद कर रहे हो, 3-3 माह 4-4 माह मजदूर जेल रह कर आए, फिर कंपनी में समझौता हुआ तो कंपनी चली। फिर दूसरी यूनित खोली गई वहाँ वर्कर काम किए, कोल्ड सेंटर खोला गया वह आज भी कोल्ड सेंटर है। जेल भरो आन्दोलन हुआ, तो आगरे जेल हम लोग गए। सुबह तीन बजे जेल में ला के छोर देते थे।

प्रश्न: जब आगरे जेल थे तो आप बता रही थीं कि इसी दौरान एक बच्चे का जन्म हुआ, तब आप कितने दिन जेल में रहे थे?

उत्तर: हाँ, इसी दौरान बच्चा का जन्म हुआ, तब हम लोग 15 दिन जेल में रहे थे, बच्चा जेल में ही पैदा हुआ, अब तो बड़ा हो गया होगा, खरौले में ही रहता था सेक्टर 5 में। हम संघर्ष से पीछे नहीं रहे, बच्चे स्कूल जा रहे हैं पर हमारे बच्चे पढ़ाई में भी बहुत संघर्ष उठाया। चलो अब तो बच्चे बड़े हो गए हैं। मेरे दिमाग में ये नहीं के अपने बच्चे हैं, सारे बच्चे हमारे ही हैं, तो इसलिए बच्चों का कहना यही रहता है कि अब आरम कर लो। मैं यही कहती हूँ उनसे कि आराम एक ही बार होगा जब अपने दुसरे घर में जाएँगे तब।

प्रश्न- कामरेड जब ये आन्दोलन चल रहा था तो इसमें मजदूर औरतों की भी हिस्सेदारी जम्म के रही होगी??

उत्तर- हाँ, एकदम, अच्छी हिस्सेदारी थी औरतों की, इस समय की बात तो नहीं बता सकती मैं, पर उस समय आधी रात को भी अपने लेडीज वर्कर्स को मैसेज भेजवा देती कि आना है तो वो आधी रात को भी पहुँच जाती थीं।

प्रश्न- तो घर से दिक्कत होती थी??

उत्तर- घर से दिक्कत थी भी, पर वर्कर को इतना विश्वास ऐसे आ जाता था कि, वो बुलाने पर मना नहीं कर पाती थीं। जहाँ माता जी हैं, मुझे सब माता जी ही बुलाती थीं, मालिक भी मुझे माता जी कह कह के ही बुलाती थी, मतलब मेरे ऊपर इतना विश्वास करते थे वो। संघर्ष में जब आए थे गंगेश्वर तो मात्र वो सत्रह साल के थे, जो के 1997 में 22 साल का था, कामरेड गंगेश्वर लोकल एक पंडित (जो के हम जात को नहीं मानते), इनके पिता जी जो हैं महात्मा रूप में थे, ये लड़का जो है शुरू से साथ नहीं छोड़ा। यहाँ तक आज भी CITU के साथ जुड़ा है, जब नहीं छोरा तो अब क्या छोड़ेगा। कांग्रेस के लोग घर तक, कम्पनी तक पचासों हज़ार रुपये दे कर खरीदना चाहे कि यूनियन छोड़ दो, पर खरीद नहीं पाए। लेकिन हम तो हम गंगेश्वर भी पीछे नहीं हटा डटा, यहाँ तक कि मारने के लिए गुंडे भी लगे, गाज़ियाबाद में हमारी तारीख थी केस की। वहाँ पोलिस के गाड़ी के पीछे हमारा पीछा करने लगे, जब थाना में हम चले गए तब जा के पीछा उसने छोरा। तभी एक लड़का उस गाड़ी का नंबर नोट कर के मुझे दे दिया, बाद में जाँच में पता चला के BJP के कार्यकर्ता की गाड़ी थी।

प्रश्न- ये किस समय की बात है?

उत्तर- ये 97 की बात होगी। चाहते तो ये कुछ भी कर सकते थे, मार भी सकते थे, लेकिन उन लोगों को ये पता था कि अगर लता सिंह को कुछ हो जाता है तो नॉएडा मने क्या होगा ये किसी को पता नहीं चलेगा, क्योंकि उस समय का प्रशासन भी ये जान रहा था कि हम सच्चाई की लड़ाई लड़ रहे हैं, और लड़े भी। लेकिन ये बात फिर कहेंगे उस समय से लेकर आज तक अगर कोई गंगेश्वर की जगह होता तो कब का चला गया होता। लेकिन मेरा साथ नहीं छोड़ा तो मेरा भी प्रण है कि जीते जी मैं सीटू और पार्टी का साथ नहीं छोड़ूँगी, जब ले हिम्मत रहेगी तब तक संघर्ष चलता रहेगा।

प्रश्न- उस दिन आप आगरा जेल के बारे में बता रही थीं, अगर पके अच्छे से याद है तो बताइए उसके बारे में। खाना भी ठीक से नहीं मिलता था न?

उत्तर- हाँ अच्छे से पता है कामरेड, आगरे जेल की बात है। पहले लड़कों (जेन्स) का बता दूँ, जब इन लोगों को बस में बैठा के जेल ले जा रहे थे तो DM से कहा हमने के ये शाम में साढ़े तीन बजे जाएँगे यहाँ से तो ये खाएँगे क्या। वहाँ तो देर से पहुँचेंगे ये, तो यहीं से खाना खिला के भेजो इनको। एक वर्कर पे ढाई सौ रुपये मिलते हैं आपको? तो उसने कहा कि बात हो गई है वहाँ, पहुँचेंगे तो उन्हें खाना वहाँ मिलेगी, पक्का? तो वहाँ गई तो बुलाया जेलर को कि खाना खिला इन लोगों को। जेलर बोला कि इतनी रात को खाना मिलेगी कहीं, हमने कहा के मिला फ़ोन DM को। तू राशन ही दे मेरे वर्कर खुद खाना बना लेंगे (कॉमरेड हम में भी कमी थी थोड़ी, मैं गुस्सा हो जाती थी जल्द ही), हमने कहा कि जब तक ये लोग खा नहीं लेते मैं नहीं जाऊँगी। खाना बनाने वाले को बुलाया, खाना बना खा लिए तब मैं वहाँ से गई। कामरेड जब महिलाओं को ले के गई तो एक टाइम का खाना आया, यहाँ से तो खा ही के गए थे। जब सुबह का खाना आया तो खाना में कीड़े पड़े हुए थे, तो कोई लेडीज देख ली, हमने कहा कि उसको हटा के रखो पेड़ के पास। समोसे आए थे अन्दर, महँगा मिले या सस्ता सभी को समोसे खिलाऊँगी, सभी को खिलवा दिया, चाय पिलवा दिया, जेलर को पता लगी होगी, वो आया। तो दुसरे बैरक में लेडी थी वो लोग भी नहीं खाई, तो कहा लता सिंह को बुलाओं। जैसे मुझे बुलाया, औरतें भी आ गई हमारे साथ, जेलर चिल्ला के कहा के खाना कैसे फिकवा दिया तुमने। मैंने कड़क हो के बोला के जा पहले तू उठा के खा कीड़े वाला, फिर वो शांत हुआ। वहाँ लड़ाई की नौबत आगई, अगर एक पैर जेलर अन्दर रखता तो सारी महिलाएँ मार डालती उसको, क्योंकि जेलर बत्तमीजी से बोल रहा था। तब तक बड़े जेलर को खबर लगी वो आया, कहा क्या हुआ क्या हुआ, हमने कहा के पहले इसको समझाओ कीड़े का खाना ये अगर खा लिया तो हम भी खा लेंगे। बड़ा वाला जेलर तो समझ गया बात को कि बात आगे बढ़ जाएगी, वो कहने लगा कि क्या खाओगे खाना में, हमने कहा बताओ क्या दोगे खाना में, ऐसा खाना तो नहीं खाएँगे, तब बाद में खाने का लिस्ट बनवाया और खाना का मामला थोड़ा सही हुआ। एक बच्चा पैदा हुआ जेल में ही तो उसके बारे में तो बताया ही था, उसका जेलर पहले नाम कृष्ण कन्हैया रखा, फिर बाद में हम लोगों ने कहा के जेल में पैदा हुआ तो उसका नाम जेलर ही दो, उसका नाम जेलर पड़ा, कामरेड ऐसे ऐसे संघर्ष हुआ

प्रश्न- आप लोगों को छुड़वाया यूनिशन ने ही, ज़मानत उसी ने कराई?

उत्तर- हाँ, अब संघर्ष में जा रहे हैं इतना क्या करना, मैंने घर वाले को भी बोल दिया कि मिलने या परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। एक बार आए थे घर वाले जेल में मिलने उसके बाद कभी नहीं आए, लोग थे देखने वाले। कामरेड पंधे भी देखने आए थे। यही तो दुःख की बात है कि पहले संघर्ष में बड़े-बड़े नेता आजाते थे हम लोगों के साथ, आज के नेता को फुर्सत ही नहीं है। हम लोगों के संघर्ष में कामरेड विमल एक बार नहीं दसियों बार हम लोगों के साथ आके मीटिंग लेने नॉएडा आई होंगी, कामरेड पन्थेर आई होगी। हमें ये नहीं लगता था के मैं दिल्ली में हूँ या नॉएडा में हूँ, मुझे इतना सम्मान मिला क्या बताऊँ। कामरेड वृंदा का भी साथ मिला हमें, कई बार संघर्षों में नॉएडा आए वो। यही सब देख के कामरेड जब मेरी जैसी औरत जो घर से कभी नहीं निकली थी, कभी नौकरी नहीं की थी, एक महीने काम की और संघर्ष देखी नहीं गई तो एक कंपनी में 35 साल बिता दिए।

प्रश्न- तो अभी आप सीटू की जिला उपाध्यक्ष हैं?

उत्तर- हाँ, मैं जिला उपाध्यक्ष हूँ और घरेलु कामगार महिला संघ की अध्यक्ष हूँ, वैसे महिलाओं का संयोजक हूँ।

प्रश्न- तब आप डिस्ट्रिक्ट यूनियन की सदस्य नहीं थीं?

उत्तर- थी सदस्य, जिला गाज़ियाबाद था।

प्रश्न- तो आप दुसरे यूनियन में भी यूनिट बनाने और मीटिंग लेने जाया करती थीं?

उत्तर- कामरेड, गाज़ियाबाद हमसे नहीं छूटा है। हर संघर्ष में मैं थी, अकेले महिला थी पुरे जिले में, दिल्ली से ले कर यहाँ तक मैं थी, दिल्ली राज्य कमिटी की मैं कंवेनर थी, कामगार महिलाओं की, आल इंडिया सदस्य भी रही हूँ कामगार महिलाओं की मैं, लगभग 10 से 15 साल।

प्रश्न- कब से कब तक थीं आप सदस्य?

उत्तर- कब से कब तक थे ये तो याद नहीं है, कामरेड मोहन लाल के मरने के एक साल पहले, कामरेड कमला मेरी जगह कनविनर बनी और मैं नॉएडा की बनी। तो मैंने यही सिखा ट्रेड यूनियन से कि नौजवानों को आगे नहीं बढ़ाओगे तो कबर में जाने के बाद हमरी छाया हमारी जगह कम करेगी, तो इसलिए कामरेड हम लोग को आगे बढ़ाते थे।

प्रश्न- तो कामरेड आज भी फैक्टरियों में जाते हो या ज़्यादातर फील्ड में रहते हो?

उत्तर- आज भी कंपनियों में महिलाओं को हमारी ज़रूरत होती है तो मैं जाती हूँ, हर रोज़ जाना नहीं संभव है। इनका कहना है कि माता ऑफिस में बैठे रोज़, मन तो नहीं मानता मैं फिल्ड में ज्यादा रहती हूँ। तो कामरेड ऑफिस हमसे छुट भी नहीं सकता, घर में रहती हूँ तो लगता है कि इलाके में गई होंगे तो ऑफिस बंद होगा।

प्रश्न- तो आप ये बताओ के आप होलटाइमर क्यों नहीं बन पाई?? आपने कहा न के गंगेश्वर होलटईमर बना मैं होलटाइमर बन पाई।

उत्तर- देखो कामरेड बच्चे छोटे छोटे थे, पढ़ने वाले थे, मैं चाहती थी कि होलटाइमर वो हो जो हमेशा मौजूद रहे। काम तो दोनों ने किया था। मुझे भी इसका ऑफर आया था, मैं सोची कि बच्चों का पढ़ाई भी ज़रूरी है, तो इसलिए गंगेश्वर को आप लोग होलटाइमर बनाईए तब एक हज़ार कोन्वेनिएन्स मिलता था मुझे, आज भी मैं जहाँ तहाँ जाती हूँ तो किराया का पैसा मिलता है। हमें चाहिए क्या कामरेड? फिर मैं कह रही हूँ आप पढ़ी लिखी हैं तो आप काम बढ़ा सकती हैं और हम लोग एक ही जगह अगर बैठे रहे तो पीढ़ियाँ आगे कैसे बढ़ेंगी। हमारी सोंच पार्टी सदस्यों के लिए कुछ अलग ही है। कामरेड हमें पार्टी सदस्यों को बढ़ाना है, उनको किस लायक है या नहीं, सीटू को भी कार्यकर्ता बढ़ाने की ज़रूरत है। एक दिन सभी का बुढ़ापा आएगा, अगर नये लोग को सिखाएँगे नहीं, बढ़ाएँगे नहीं तो आगे संगठन कैसे चलेगा।

प्रश्न- आप की पार्टी में भर्ती किस साल हुई कामरेड?

उत्तर- मैं 92 से पार्टी में रेगुलर हूँ।

प्रश्न- तो आप बता रही हैं के कामगार महिलाओं की कन्वेनर रही हूँ तो उसके लिए आप बाहर भी कांफ्रेंस में जाती थीं?

उत्तर- हाँ, जाती थी, कभी हैदराबाद, चेन्नई, बंगलोर भी गई हूँ, अकेले भी गई हूँ। टिकट करा के यूनियन से मिलता था। कोलकत्ता कहीं नहीं छुटा हर तीसरे महीने मीटिंग होती थी। आज भी मीटिंग हुई है, lockdown के वजह से थोड़ा डिस्टर्ब हुआ है

प्रश्न- आप कामरेड बता रही हैं के नॉएडा और गाज़ियाबाद को मिलाकर के आप उपाध्यक्ष रही हैं लेकिन उससे पहले भी डिस्ट्रिक्ट कमिटी में सदस्य थीं?

उत्तर- हाँ, मैं सदस्य थी, जिला गाज़ियाबाद में, अरे काफी समय तक सदस्य रही हूँ यहाँ। 97 का जब हड़ताल हुआ तो मैं 10-10 बजे रात को गाज़ियाबाद से आई हूँ, अंडर ग्राउंड रहती थी मैं। रात में लोग छोड़ देते थे, अंडर ग्राउंड में दिन में कहीं गज़ाबाद, रात में घर आजाती थी। वही गलत काम किय एक दिन तब मैं पकड़ी गई (सभी बोले थे के रात में भी घर नहीं आना) पर बच्चे कहे कि मम्मी आज रहो घर पे ही, छापा पड़ा और मैं पकड़ी गई। पर मैं बची भी, मैं छत पे थी जब पुलिस वाले आए आँगन में पर स्टूल लगा के मैं दुसरे के छत पे उतर गई। वैसे सुनती रही सब बातें, घर पे पोलिस का आना समाज में शर्म वाली मानी जाती है कि पुलिस किसी के घर क्यों आया। हमारे गाँव तक पुलिस पहुँची थी। कामरेड ऐसा था, उसमें एक था के मेरा नाम कोई नहीं जानता असल नाम से, मुझे गाँव में किसी और नाम से पुकारते थे, पुलिस पूछी कि लता सिंह कौन है, तो लोग बताए कि लता सिंह नाम का कोई तो है नहीं। पुलिस वाले के पास में छोटे भाई की बीवी आगई बोली के हाँ लता सिंह है यहाँ की, अब वो नॉएडा में रहती हैं। और बहुत कुछ पूछा पुलिस वाले ने, उस समय 500 रुपये थमाया और पुलिस वाले आगए और अच्छा रिपोर्ट दिया उसने। जेठ को पता चला के पुलिस गाँव गई थी वो बोले के ऐसे पुलिस जाएगी तो गाँव में शिकायत होगी। हमारे हस्बैंड से कहा के देख लो इनको थोड़ा समझाओ, अगर मैं गलत काम कर रही हूँ तो कोई बात भी है, मजदूरों के हक के लिए लडती हूँ इससमे क्या बुराई है। ऐसे ऐसे तो हुआ कामरेड। तो घर से भी परेशानियाँ उठानी पड़ी। उन्नीस साल गाँव नहीं गई कामरेड कि कोई जाने नहीं कि क्या करती है यहाँ। उन्नीस साल बहुत होता है कामरेड, अज देख ही रहे हो आप।

प्रश्न- तो अच्छा आप एक बात बताओ, कि अस्सी के दशक के अंत में जब आप लोग ट्रेड यूनियन के लिए संघर्ष करते थे तब के सरकार के रवैये में और आज के सरकार के रवैये में क्या फर्क पड़ा? थोड़ा इसके बारे में बताओ?

उत्तर- देखिए जब कांग्रेस की सरकार थी तब भी हम लोग संघर्ष करते थे, सड़कों पे लड़ते थे, अभी भी संघर्ष करते हैं। कोई भी सरकार मजदूरों के लिए आई ही नहीं। मायावती के सरकार में कुछ हुआ। कानून तो गलत ही बनाया कि कंपनी में कोई घटना होती उसको हरिजन एक्ट के तहत अन्दर कर देते थे, लेकिन हम संघर्ष करते थे तो उस समय जब हम प्रदर्शन करते थे तो पुलिस तो परेशान करती ही थी पर एक बात है कि पुलिस लठबाजी नहीं करती थी कामरेड, इतना ही था। कोई भी सरकारें मजदूरों के लिए तो आई नहीं, मायावती ने भी बातें तो बहुत की पर कुछ किया नहीं, तो सरकारें तो कामरेड जब भी आई वादा पे वादा करती रहीं। आज भी bjp

की सरकारें वादा पे वादा तो कर ही रही हैं। ये गरीबी को न हटा कर के गरीबों को ही मार रही है। आज दो सौ रुपये सरसों का तेल हो गया है, इतनी महँगाई कर दिया, गैस सिलिंडर इतनी महंगी हो गई, पाँच से सात हजार कमाने वाले बेचारें क्या करेंगे अब, खाएँगे कि बच्चों को पढ़ाएँगे। कामरेड गरीबी मजदूरों का सरकार निवारण नहीं करेगी, ये रहा गरीबों मजदूरों का। आज भी देखिए केंद्र में मोदी की सरकार है, मोदी पुरे देश का प्रधान मंत्री है, जो वो कह रहे हैं पुरे देश में हो रहा है। तो राज्य सरकारों को तुम बाध्य कर रहे हो कि केंद्र से जो पास होगा तुम्हे लागु करना होगा। इतनी जगह एन सी आर में दिल्ली के बराबर नॉएडा, गाज़ियाबाद में तनखाह नहीं दे पा नहीं रहे हैं, प्रधान मंत्री तुम किस बात के हो?

प्रश्न- तो आन्दोलन कमज़ोर हुआ या मज़बूत हुआ?

उत्तर- नहीं कामरेड आप पूछ रही हैं 87- 88 में या शायद सन 78 में यहाँ ट्रेड यूनियन बनी है तब से संगठन हमारी तब भी थी जब ये ऑफिस नहीं रहा करती थी। गाज़ियाबाद तो जब से हम आए हैं तब पार्को में बैठ के कभी उस दुकान में, कभी उस दुकान में बैठकर के वर्करो से मिलकर के उससे हक की बात करना, उसका संगठन बनाना, तभी भी हमारा जारी था और आज भी हमारा जारी है।

प्रश्न- कामरेड आप कामगार महिलाओं के बारे में जो बातें कर रहे हो आप, ये घरेलु कामगार है या फैक्ट्री की कामगार है?

उत्तर- नहीं कामरेड, कामगार महिला समिति अलग है, और घरेलु कामगार महिला समिति अलग है। एक समय यहाँ नॉएडा जिला गौतम बुद्ध नगर में कामगार महिलाओं की एक कमिटियाँ भी बनी थीं कि जिस कंपनी में काम करने वाले होंगे उस कंपनियों में महिलाओं का अगर बीस से जादा महिलाएँ हैं तो उसमे एक क्रेंच होगा, उनका बाथरूम अलग होना चाहिए। इन सब को लेके उनका कोई शोषण या कोई दबाव हो तो कमिटी उसका बैठ के संचालन करेगी जिसमें डीएम, डी एल सी (डिस्ट्रिक्ट लेबर कोमिशनर) और लता सिंह उस कमिटी में थी। दो तीन बार इसकी मीटिंग हो पाई उसके बाद नहीं हुई। दुबारा कमिटी ही नहीं बन पाई। अब घरेलु कामगार यूनियन जो है वो घरों में काम करने वाली महिलाओं का इतना शोषण हो रहा है, जो वो काम करती हैं, उनको पैसा न देकर के मार पीट कर के चोरी का आरोप लगा करके, जब उसके साथ बहुत ज्यादा शोषण होने लगा तो हम लोगों ने घरलू कामगार समिति बनाया है। सिर्फ बनाया ही नहीं है। आम्रपाली जो कॉलोनी है वहाँ कुछ केस हल भी किए हैं, महा कुम्भ कॉलोनी है, उसमें भी एक केस हुआ था कि महिला को मार के ज़मीन के अन्दर गाड़ दिया था, उसके लिए बहुत लड़ाई लड़नी पड़ी।

प्रश्न- मतलब कोठी में काम करने वाली औरतें होती थीं?

उत्तर- तो घरेलु कामगार यूनियन अलग है, पर ज़रूरत पड़े तो आप उसमे भी जाते हो, हाँ हम हैं उसमें भी। हाँ संयोजक हूँ उसकी। अभी एक मामला आया था आम्रपाली का, दो महीने काम कर के वो बीमार हो गई, बीमार में कैसे काम करेगी वो, और वो मकान मालकिन उसको बुला लिया। मुझसे बात हुई तो वो बोली के माकन मालकिन के साथ साथ वो फैक्ट्री मालकिन भी है (अपने मुँह

ही अपना खुद तारीफ कर रही थी) वो तो काम करने वाली को अपने घर बुलाई बड़े प्रेम से और वो तो मार पीट करने लगी। गेट में धक्का देकर के मारना शुरू कर दिया। उसकी एक बहन लगती थी एक वो देख ली उसने आके बचाया, तो वो कहीं के काम कर तब पैसा देंगे या दूसरा कोई ला के दे फिर देंगे। दूसरा कोई आने वाला नहीं है, फिर तुम ऐसा करतब क्यों करते हो के दूसरा कोई आता नहीं? मैं इसमें पड़ी थी कि ये ज्यादाती की है तो इस के साथ कुछ न कुछ होना चाहिए। पर पैसे दे कर आपस में समझौता इसने कर लिया। कामरेड अब ऐसे केस आती रहती हैं। ये काम करवाती है पुरे दिन; जैसे पहले किचन में चौका बर्तन करवाएगी, बैठने के लिए उसको जगह भी नहीं देते, वो नीचे मैट पे बैठती है, चाय भी नहीं देंगे, सभी ऐसे नहीं हैं, कुछ तो उसमें से काफी अच्छे भी हैं तो उसका नाश्ता पानी तो दूर की बात चाय तक नहीं देते। आठ घंटे काम करो और बाथरूम करने कहीं और जाओ, इसके लिए भी हम लोगों ने संघर्ष किया। घुस गई कॉलोनी में हम और पुलिस, भाई बथ रूम लगी है तो कहाँ जाएगी। एक लेडिज कहीं पार्क में चली गई बाथरूम करने, जब निकली वहाँ से तो सेक्युरेटी गार्ड ने उसे मार दिया, ये दिल्ली लक्ष्मी नगर की बात है, इस पे हम लोगों ने संघर्ष किया और कहा कि जब आपने बाथरूम में नहीं जाने देते हो तो बाहर में बाथरूम बनवाओ। कहीं कहीं इसका समाधान भी हुआ है तो घरेलु कामगार महिलाओं का शोषण तो काफी हुआ है।

प्रश्न- और ऐसे कामगार महिलाएँ जो फैक्ट्रियों के बीच में काम करने वाली महिलाएँ उनके बीच में भी आपका काम रहा है?

उत्तर- हाँ, जिस फैक्ट्री में एक ही टॉयलेट है जहाँ पुरुष जा रहे हैं तो महिलाएँ इंतज़ार कर रही हैं तो वहाँ भी हम लोगों ने संघर्ष छेड़ा है और अलग अलग बाथरूम बना और कई जगह नहीं बना, ये संघर्ष अभी जरी है कामरेड।

प्रश्न- और अभी जो फ़िलहाल का स्ट्राइक जो हुआ दिल्ली में उसमें भी भागीदारी रहा आपका?
उत्तर- हाँ हाँ उसमें भी महिलाओं की भागीदारी रही, जगह जगह पे पुलिस लगी थी, मोदी जी, योगी जी आने वाले थे। नाँएडा में कहीं हवाई अड्डा जो बन रहा है उसका उद्घाटन करने वाले थे, तभी भी हमारा स्ट्राइक सफल रहा। अब बताओ पुलिस खुद रो रही है, राशन वाले रो रहे हैं कि अगर इतना बस भर के पब्लिक को नहीं लाओगे तो तुम्हारा राशन कोटा बंद हो जाएगा। सब को खीच खीच के बैठा के ले गई उसके बाद भी हमारा स्ट्राइक सफल रहा है।

प्रश्न- तो क्या महिला मजदूरों पे हमला तेज़ हुआ है, आप को क्या लगता है? हमला तेज़ हुआ है? किस तरीके का हमला हुआ है?

उत्तर- हमला इस तरीके का हुआ है के ड्यूटी 12 घंटे का कर दिया है, अगर ऐसा कर दिया है तो 12 घंटे का सुरक्षा इन लोगों को देनी पड़ेगी, दूसरा ये के अगर बारह घंटा ये पुरुष के बराबर का काम कर रही है तो इससे पुरुष के बराबर का वेतन देना पड़ेगा, ये लडाई चल रही है। तो हम लोग का ये भी कहना है कि इनका ड्यूटी आठ घंटा से अधिक का नहीं होना चाहिए, इनको दोहरी मार पड़ जाती है न कामरेड, कारखानों का भी काम और घर का भी काम, ये संघर्ष हमारा चल रहा है। जहाँ हमारी यूनियन है वहाँ हम कामयाब हैं, पर जहाँ हमारी यूनियन नहीं है वहाँ हम पैर ज़माने की कोशिश कर रहे हैं, मजदूर तो मजदूर ही होता है।

लेकिन ये जो तोड़ने वाले हैं, मजदूरों में भी तोड़ने की कोशिश करते हैं, इसीलिए विरोधी पार्टियों में एकता की कोशिश नहीं बन पा रही है, जैसे उस दिन बसों में भर के ले गए खाना का, पैसा का लालच दे कर ले जा रहे हो। ये कहते हैं के बीजेपी का हाल वही होगा जो बंगाल में हुआ है, पैसा खाए बीजेपी का और वोट दिए ममता को। यही up में हो जाएगा तभी कुछ हो पाएगा गरीबों का वरना सत्यानाश होगा गरीबों का। बीजेपी सरकार ने ये काम किया है कि कंपनी मालिकों को इतना छूट दे दिया है कि वो जब चाहे मजदूरों को बाहर निकाल फेंकें, उनका कोई अधिकार नहीं है कि वो यूनियन बनाए और लड़ें, जो दें वो ले कर रख ले, यही दिक्कत है। जो परमानेंट कर रहे हैं उसको भी परमानेंट खत्म करके कैजुअल में रख दिया, वो विरोध नहीं कर सकत, पूरी कंपनी ठेके पे वो चलाए तो भी आप विरोध नहीं कर सकते। lockdown का बहाना दे कर आज भी अभी किसी किसी कारखाने में आधा तनख्वाह दे रहे हैं। लेकिन गरीबी ऐसी बुरी चीज़ है बेचारे रोटी कमाने के लिए कर रहे हैं, ये सरकार का रवैया है। अभी तो एक हड़ताल हुई है लेकिन संयुक्त हड़ताल होगा देखो आल इंडिया का क्या फैसला आता है, दो दिन की संयुक्त हड़ताल होगी।

Life and Struggle of Lata Singh: Making of a Trade Union Leader of ‘Discharged’ Workersⁱ

The Background:

The landscape of the city of Delhi, in the closing decades of the twentieth century, are marked with militant working-class struggle and trade union movements. Early in this phase the impoverishment of the textile industries in Delhi put the first rank of industrial workers at par with the vast numbers of ever-increasing informal labour force living in deplorable conditions in the unauthorised *Jhuggi Jhopri* Clusters in different pockets of the city. The newly emerging industrial towns at the border of Delhi could not provide any better working and living conditions for the increasing and diversified labour force that kept on flooding the cityscape in early eighties. Therefore, the trajectory of the building of trade union movement within Delhi and the National Capital Region (NCR), especially in Noida and Ghaziabad, in the post emergency era, was not very different from the developments taking place in the main city. Building trade union units on the demands of minimum wages, health insurance and other benefits, leave, maternity rights and better living conditions was a common factor for working class movement at both the places. The of textile workers of the city, already organized under the banner of various trade unions provided leadership to the emerging informal sector of Delhi. In Noida and Ghaziabad, organizing workers through the formation of unions in factory units and fighting for their rights went hand in hand. An entire generation of working-class trade union leaders emerged out of these struggles in the NCR region of Noida and Ghaziabad.

Noida, 12 kilometres away from Delhi, part of Ghaziabad district of the state of Uttar Pradesh, came into existence in 1976. Initially, the township comprising 495 hectares was meant for small and medium industries gradually expanding up to 985 hectares. Later, the industrial town was converted into an Export Processing Zone comprising mainly garment and hosiery, shoes, electronic, and rubber production industries. Most of the workers working in this township came from a common social background. Majority of them came from the adjacent states of Uttar Pradesh and Bihar and few from the southern states of Kerala and Tamil Nadu. Overwhelming numbers of these migratory workers were from rural background. Local men were part of this common pool of labour and its reserve but women of Noida were conspicuous by their absence. Women coming from other states comprised significant numbers of the workforce. They

primarily worked in the labour-intensive industries of footwear, garments and electronics. Their numbers kept on increasing throughout the eighties. The usual numbers of workers in the individual factory units in Noida was at least 50 and often more than 100, yet the working conditions from the perspective of labour bore similarities with the informal sector. Casual and contractual nature of employment along with the absence of minimum wages and other rights and benefits was predominant.ⁱⁱ

Although, Noida was portrayed as an “Ideal Industrial Area” in the official narrative of the state and a set of tax relief and concession was offered to the industrial class operating in the industrial town, in reality massive closure was taking place parallel to this so-called development. Different surveys conducted by government agencies showed that almost half of the industrial units were getting closed over a decade under the pretext of industrial sickness. Under the Industrial Dispute Act of 1947, industrialists were needed to take prior permission from the government before closing down the factory. This provision was seen by the capitalist class of the country as a structural hindrance for the industrial growth that needed reform. But the real situation of the sector was different whereby industries were already getting closed and therefore creating a huge force of ‘discharged labour.’ Contrary to popular belief, the army of labour once discharged from work, could not find alternative employment and kept on getting reduced to condition of further pauperization. With this background, the trade union movement marked its root in the industrial town of Noida.

The small industries of Noida which marked both the flight of labour and the capital from the national capital was the basis for the declaration of Noida as a National Export Processing Zone (EPZ) in the year 1986. The formation of EPZ did not automatically result in the expansion of the industrial town, rather it was the expanding urban market in and around the national capital and the location of Noida that acted strategically as a collection and distribution centre, stimulated the expansion of the town as an export processing zone. Garment industry saw the maximum boom. Production and export of shoes was also significant.

The majority of workforce in this EPZ was comprised of 83% migrant workers, mostly coming from rural backgrounds and some commuting from adjacent Ghaziabad. Women workers

comprised a significant portion of this migrant population. The previous industrial town and the EPZ spanned out on the either side of the residential area of the workers.

According to survey conducted by the CWDS “that 68% of the women workers were denied minimum wages, 42% were casual or contract workers. At the time of the survey, it was estimated that there were at least 30,000 women workers in Noida, whose numbers have continued to steadily increase. But according to the Factories“ Inspectorate, in 2001, only 11,000 women workers are recorded of whom 2,400 are in NEPZ.”

The Story of Phoenix

The shoe called called the Phoenix International Limited was incorporated as a private limited company in Noida in 1987 in this backdrop. The company had an agreement with JSC Rusfintorg of Russia for supplying manufactured shoes by 1993 and in the year 1995 it manufactured over 10,80,000 pairs of shoes. Around 1996, a huge fortress like unit (a three-tier unit, basement, ground and first floor) for shoe production was built up in the phase II of sector 60. Later it also signed a memorandum with the shoe company called the Reebok and soon its production reached around 7 million per annum. The company had four units in Noida with 3000-4000 workers working in these units. The company was promoted by Mr D.N. Kalsi and Ajay Kalsi.

Around 2000 all the units of the company were closed with a call centre replacing one unit. As per the version of the management, the units were amalgamated into one due to various factors ranging from the rise of China to ‘labour strike.’

The Trade Union and Struggle of Industrial Workers:

The trade unions, especially the Centre of Indian Trade Unions (CITU) had its beginning in Noida by 1978-79. Most of the intervention of the union was at the level of the small industries spanning from sector 1-8 of the industrial town which was part of Ghaziabad district of Uttar Pradesh. K M Tiwari, the current state secretary of the Communist Party of India Marxist (CPIM) who starred his life as a trade unionist from Noida-Ghaziabad region, recalls that the industrialists simply used to consider the workers as their slaves and private property.ⁱⁱⁱ Their mindset was that of feudal lord (*samanti soch*). Women workers were especially oppressed and

harassed by the owners and management of the factory, for example, if a woman was inside the toilet, a male employee from the management would go and bang the door and shout '*kab tak andar rahegi? Bahar nikal jaldi.*' They were made to stand in under the scorching sun in the afternoon for hours. The unit A-99 where Lata and Gangeshwar worked had issues like putting the names of the workers on the master roll, demands for wages etc. On these issues union was formed there. But exploitation (*daman-pidan*) of the workers, especially of the female workers, who comprised half of the labour strength, was maximum in the sector 60 factory of the company. Oppression of the workers took the most violent turn there.

In the vocabulary of the trade union movement, this area was identified as criminal belt where massive use of crime against the workers and the trade union by the industrialist class was the rule of the day. The brother duo, Mahinder Bhati and Rajbeer Bhati were infamous muscle men from the adjacent Dadri area who used to mobilise goons against the trade union leaders and intimidated the workers at the behest of the owners of the companies. Often thugs would be brought in buses to break any ongoing strike or agitation of the workers.

Lata Singh, a militant trade union leader of the CITU and a worker in the Phoenix factory emerges from this context.

Always on the Move and Merger with the Working Class :

The early life of Lata Singh is similar to that of majority of workers that migrated to the industrial town of Noida in search of livelihood after they could not sustain themselves back in the villages.

Lata Singh is the youngest of four sisters and two brothers. She was born in Maharashtra. Her joint family got scattered (*parivar ttrbitir ho gaya*) early in her childhood. Getting school education was difficult for them. The sisters stayed back at home. Her nana was a *kotwal* there and he could make some amount of property. Some of her relatives still live there. Her father was a master in some inter-college in Maharashtra. One could give away his job in favour of any family members. So, her father decided to give up the job for his brother and started working as a manager in a mill called Sanichari Mill in Bombay. After the mill closed down, her family shifted to Jaunpur (Kerakat kshetra) in Uttar Pradesh. The rest of the family members, i.e., Lata Singh's paternal side of the family, were living there already and had some amount of land.

Being the oldest of all the brothers, Lata's father was not allowed to do any physical work in their farm. His brothers mostly took care of their livelihood. Lata went to school in Jaunpur but could not finish her education beyond class 1. But back in village, the family did not face any financial crisis. The uncles (chacha log) extended help in matters of marriage etc. The joint family remained together till her mother died.

Lata Singh got married before she reached her puberty. After marriage she came to a joint family living in another part of the Jaunpur district. Her husband's family had considerable amount of land (20 acres as she can recall) and was in *kheti ka business*. At her in-law's house she never stepped out of the household. Women mainly performed domestic workers (*culha-bartan*). Due to some family dispute her father-in-law gave away the entire property to his elder brother and his sons. This sudden turn of events forced Lata and her husband to migrate to Noida in search of work. The couple brought their two children along with them, but did not carry other belongings.

Lata's *jeth* (a family relative) was working in sector 12 in Noida as *JE* in the Telephone Exchange. At his suggestion Lata's husband started working in a chemical factory in sector 2 (Final manufacturing company). Lata remained at the house of the relative but soon she joined a shoe factory called the Phoenix. A woman who never stepped out of house even to work in her own family farm, quickly got drawn into the vibrant trade union movement of the city and she describes her life as one that is spent in the service of working class (*majdoor ka seba*).

Lata's relative was acquintanced with the owner of the shoe company and with his recommendation she joined in one of the manufacturing units of the company in 1989. Gangeshwar Datt Sharma, a co-worker of Lata Singh and a local boy was already working in the same unit of the factory. A 16-17 years old boy back then, Gangeshwar along with few other workers were thrown out from the company. These workers asked for proper Diwali bonus instead of some token sweets distributed by the management. On that pretext, the administration and the owners of the company forced them to resign. Lata Singh joined the company at this time when the possibility of the formation of trade union and waging protracted class struggle was brewing in Noida.

The decade long struggle in Phoenix and other factories of Noida gave birth to the generation of militant trade unionists like Gangeshwar, Lata Singh. The memory of comradeship between the

two also remains strong when Lata Singh recalls the history of their struggle in the factory and building working class movement in Noida. Lata recalls the hardship that Gangeshwar went through from a very young age. Starting the life of a trade unionist at the age of 16/17, he stuck to his lifelong political commitment which acted as a source of inspiration for Lata to continue her life of activism as a CITU leader (*main CITU ka jhanda kabhi bhi nehi chodungi*).

The Struggle at Phoenix: Building Union Against the Odds ---- A Trade Union Memory

The shoe factory had considerable numbers of female workers mainly involved in stitching and pasting the sole of the shoes. Often, they used to run machines. Only Lata's unit had 400 female workers. No separate trainings were given to the workers for these jobs.

Altogether there were around 4000 workers in four units of Phoenix. Starting from 300 to maximum 500 used to be the minimum wage back then in Noida. Female workers used to receive less than the male workers. Other rights like ESI, PF nothing was available for them. When Gangeshwar and some other workers raised those demands, they were targeted. Noida used to fall under Ghaziabad district at that time. Ghaziabad already had trade union in many factories under the banner of the CITU. Gangeshwar Datt Sharma approached the CITU leadership there and formed the first union in their unit of Phoenix in Noida. The union got into a legal battle with the administration of the company and own it. All the workers who were forced to sign their resignation letters were reinstated again. Both Lata and Gangeshwar were in the same unit of the company A-99.

Being a shoe factory, workers of the Phoenix had to deal with leather. Processed skin used to come to the come to the factory for further works. This factor resulted in the recruitment of the Dalit labourers in the factory. Apart from the Dalits and caste Hindu migratory labourers, Muslims also worked there. But in terms of the job division, the factory floor was not divided. On the top of everything, the shared experience of exploitation as workers and the presence of the trade union to organize the workers further cemented the unity.

According to Lata, workers were aware of their caste: someone was thakur, someone was a pandit, someone a Muslim. But the identity of workers and role of the union in shaping and cementing that was crucial. Often, they discussed that the owners might make four gates of the factory to segregate them. But as long as they ate together, fought together, they were one.

Till this time Lata Singh had no clue about CITU or trade union in general (*laal jhanda keye hota hain hum jante hi nehi the*). So, when she was approached to fill the form of CITU membership, Lata was reluctant initially. With slight persuasion from Gangeshwar she soon became a member of the union.

It was this exploitation of the workers that turned that reluctant onlooker Lata into a fierce trade union leader. Although the transition was sudden. She recalls that the owners of the company were so notorious (*malik itne haramkhor the....*) that they had a token system in place for workers to access toilet. Even pregnant women were not spared. The extent of exploitation used to make Lata extremely agitated. Once a cleaning staff of the company was smoking a *bidi* near the toilet. Perhaps somebody informed the owner. He thrashed the worker and asked him to nil down (*moorga bana diya*). She could not tolerate the humiliation of the worker and protested. Similarly, another member of the union was beaten up by the owner. The workers protested again. In her own word both the owner brothers, Atul and Ajay Kalsi were ‘*badtameez*.’ Once nineteen workers were suspended. She fiercely confronted the management of the company saying that if someone’s name should be put in the list, she should be the one, because she was the first amongst the workers to protest against the atrocious behaviour of the owners. Often supervisors of the factory units used to sexually harass female workers.

Gangeshwar Datt Sharma, the secretary of the CITU unit, was transferred to another unit. Under her leadership, workers blocked the gate of the factory unit and stopped the owners from entering inside. Under pressure from the organized protest, Gangeshwar’s transfer order was cancelled. The token system was also withdrawn.

The workers’ struggle in Phoenix was long-drawn. Labour laws were not implemented in the company. They even tried to close down the factory on the excuse of manufacturing and export sickness. But formation of union was one reason. The struggle was so militant that many of the union members had to remain underground for 6 months. The situation in another unit in sector 2, D-18 was also same. Union formed two committees of workers in that unit. They were all locked up inside and goondas were called from Rajendar Place. They were all brutally beaten up for forming union. Many of them carried injuries. Gangeshwar was never given gate pass to enter another unit of the same factory.

Lata Singh took along another female co-worker and got out with the excuse of going to bank. They reached the gate of the factory at sector 2 and confronted the management there. The union used to fight cases for the workers' right at Ghaziabad Labour Court. They were able to get favourable judgements. Soon the struggle spread in all four units of the Phoenix. Lata reached everywhere. In other units she was not even known so much. Similar incident was repeated in other units of the company where workers were assaulted by the goondas called from outside. The administration did not like the fact that the workers getting organized. Once the fight was so severe that not only the workers of Phoenix stopped working and assembled at the gate but the workers from other factories also came out in support. Media also reached there. Next day administration shut the four units of the company. They just wanted to throw the union leaders out and keep the rest of the workers. But the unions' presence and effect were so strong that administration did not succeed in this. The company was shut for one whole year. It was absolutely difficult for the workers to stick to struggle for such a long time with dire economic bearings. The owners exhausted all means to break them, yet most of them remained in the fight. According to Lata this was only possible because of the leadership of the union. The union fought the cases for workers' rights in the labour courts of Ghaziabad, Meerut and finally won. But the owners were hellbent that Lata and Gangeshwar will not be retained in the company. For fifteen-sixteenth months they were outside but the influence (*daheshad*) of the CITU was such that they were very much an insider (*hum bahar rahain kar bhi andar hi the*). After we were reinstated, the company functioned for twelve years before it closed down finally in 2001. One unit was still open in sector 60. Union was formed there as well and similar situation prevailed. The owners set up a call centre there later.

The task of organizing the workers spilled beyond the working hours of the factory. Lata used to go to the sites even at night. Mostly accompanied either by her husband or brother-in-law. Often young members from neighbourhood also went along with her. It was the night of 23rd March of either 1990 or 91, the administration was removing products from the factory in most hideous manner (*chori se maal nikal rahe the*) with the help of the local administration. She used to live in sector 22 which was 2-3 kms away from the factory. Sensing that something was wrong, Lata reached there. The owners were sitting inside the fire brigade vehicle. The entire staff of the

management was involved in the process and even goondas were present. Even they fired rounds of bullets. Local administration was hand-in-gloves with the factory owners.

Lata called people from the neighbourhood. The workers also reached the spot at night and blocked the gate of the factory till the District Magistrate and police did not reach the site. Lata asserted herself by saying '*ye chori kar rahe the....chori ka saza keya ho ta hain?*'

In the formative stage of trade union movement organizing the labourers was also difficult. They did not have their own office. Union meetings were held in different parts of the industrial town: When CITU just started working a tea shop, Sharma Tea Stall, belonging to an elderly couple at pashe used to be the gathering place of the trade union leaders. Later, Park of sector 1, Shimla Park, in front of another company called the Super Catches etc. If a worker was sacked, there used to be immediate meetings at the gate. Otherwise, gate meetings used to happen either before the beginning of work or at the time of closing of the factory units. Communication was not easy either. Often at night, union leaders had to go on cycle to the houses of the workers to inform them about something important.

Once units came into existence in all four factories of Phoenix, a combined unit was also formed for coordination amongst the different units. Lata, Gangeshwar along with few other union representatives from each of these committees were there. Lata rose to the rank of joint secretary, vice president and president of the CITU unit of Phoenix.

During the All India industrial bandh of 1997, the owners (*malik aur malkin*) of the factories blocked the road of the sector 20. This had happened mainly under the banner of the Noida Entrepreneurs' Association that was long active in the industrial town and exerted considerable influence on the policy makers and could ensure a host of tax special tax benefits in their favour. It was this association which also exerted pressure on the respective state governments and industry captions for doing away with labour department's inspection in the factories. It was the government of Congress party then. They had local MLAs with them. They gheraoed the police station. The SSP also joined hands with them. In other words, the entire local administration came in support of the factory owners and opposed the workers' strike. But the trade union could mobilize huge numbers of workers. In fact, the factories that did not have union also witnessed large number of workers coming out in support of the national strike ---- '*Noida ekdam*

thap....koisi company se dhua nehi.....” Relative of Indra Kumar Gujral’s company was also affected during this strike. The workers of the Phoenix played a leading role in mobilizing or organizing the strike.

the entire Noida was shut for eight hours. The workers took control of the area. Before the strike police was looking for Lata and other union leaders. Some policemen reached her home at night. Her husband tried to dodge them for a while. But she was arrested at night. Many CPIM leaders from Delhi like Brinda Karat, Pushpinder Singh Grewal, Mohanlal Bharadwaj, and K M Tiwari from Ghaziabad reached the police station for the bail of the union leaders. They managed *kachchi* bail for them. Next day after the strike, while coming out of the factory, she was surrounded by policemen and arrested. Union later secured bail for her and others. Leaders of trade union and CPIM always came to meet and help the workers whenever any big agitation took place. Vimal Randive of All India Kaamgar Mahila Union, Pramila Pandhe came on several occasions.

During this phase, Lata had to remain underground for several days. Once she came back home to spend the night with her children. Police reached her house. It was not easy as neighbours always did not understand the situation. Police coming home in search of a married women was seen with suspicion and stigma. One stool was kept on the terrace. She climbed and jumped off on the terrace of the adjacent house.

Intimidation of the Trade union Leaders: A Direct Confrontation

As leaders of CITU, Lata Singh and Gangeshwar were always targeted by the company owners and management. Gangeshwar Datt Sharma was the secretary of the CITU unit of the factory. The owners of the company always used to mobilize locally powerful musclemen to intimidate the leaders. They had a free run. There was one local goonda from Dadri called Mahinder Bhati, who also happened to be the MLA of the constituency, his brother Rajbeer Bhati started looking for Gangeshwar. They entered our unit and were waiting in the guard room. Both Ajay and Atul Kalsi were present there. Lata confronted Rajbeer saying ‘if you want to meet, why only Gangeshwar, I will call the entire union leadership. But talk to me first.’ There were many attempts of intimidation like this. The workers used to have their gate meetings (assembly at the

factory gate whenever required); the management tried to stop that by using force. But nothing could stop the iron will of the workers.

Lata was followed by the henchmen of the local BJP leader once during the agitation of 1997-98. She was going to Ghaziabad in a bus for some union work. Soon she could realise that the bus is being followed by some goondas. Somehow, she managed to get down in front of the police station and sought shelter inside. But harming a trade union leader of Lata's stature in the zenith of trade union movement in Noida was not easy. In Lata's own word '*woha ka administration bhi janta tha ki hum sachchai ki ladai lad rahe the.*'

Once Lata and Gangeshwar were called to the house of the owners ---- Ajay and Atul Kalsi ---- at Rajinder Place. They both informed the union leaders of the state and reached there. The experience was one of awe, intimidation and bribery. Escorted by guards, walking through the large and lengthy corridors of the multi-storeyed mansion, they reached a room where the father of the owners was sitting with his vault open. Apart from money, the offer of government job for Gangeshwar, car and house for Lata at Noida was on the table. In Lata's own words '*woha se nikal na bhari tha.....*'

During one agitation, cars and computers of the company were set on fire by the management and the blame was put on the workers. Lata and Gangeshwar were made main accused. In another protest, when the workers blocked the gate, goondas were called from Trilokpuri and Lata was openly threatened that her kids will be kidnapped.

Getting bail was not easy for the workers and especially union leaders. The industrialist lobby always pressed for slapping charges as per National Security Act (Rshtriya Suraksha Kanoon or RSUKA in the language of the workers) against the workers. Often owners of 2-3 factories used to come together and lodge FIR against the workers and trade union leaders. The police and local administration used to act on their behalf. According to K M Tiwari, this is a long-standing practice of the state and ruling classes used against labour. Mostly false charges will be imposed on the leaders, especially those whose names appear on the pamphlets. Multiple cases would be put against each of them. No matter how trivial the charge is, as per the law against one charge, the accused needed two bailers.

When Noida was under Ghaziabad district, even trade union leaders from Ghaziabad got cases against them. Against person, there used to be 10-11 cases. Workers of Phoenix and trade union members from Noida has 12-13 cases against each of them. During one national level agitation, different owners of different companies lodged FIRs in 2-3 police stations. All of them got converted into cases which means 24-26 bailers were required for each of the workers. We were fighting for laws in favour of the working class (*hum to kanoon ke liye lad rahe the*). This was going against us. People did not have ESI and PF. Trade union in Noida was relatively new. Getting so many bailers for one person was next to impossible. This was just a ploy to keep the workers and trade union leaders behind the bar for months. The CITU used to get workers from Ghaziabad whose names were on the master roll and got ESI and PF as bailers for workers of Noida (*to management ka hamla isi liye hota tha ke majdoor o ko mahine tak jail me rakkha jain ke wo zamanti hi dhunte rahe*).

The administration always stood with the industrialists. When Noida used to be under Ghaziabad district, before Gautam Budh Nagar came into existence in 1997, it was under Dadri tehsil. The SDM was in-charge of this. When Narayan Datt Tiwari was the chief minister, the administration had a free run and stood beside the industrialist lobby. Used all repressive tactics including use of crime against the trade union movement.

If there was intimidation on one hand, solidarity of the workers inside the factory and in the neighbourhood was strong. Lata's children were looked after by another young couple who were fellow workers in another factory. Due to similar dispute in Vijar Overseas company they lost their jobs and took shelter at Lata's house. The CITU was fighting their case as well. Chalera, Barola ---- all these neighbourhood were populated by the workers of various industries. Lata's house owners, an old couple, were also cooperative. She lived at sector 22.

Lata's Own journey as a Woman Trade Union Leader:

Being a woman Lata faced additional pressure and humiliation. Lata's male relative (*jeth*) was influenced by the owners of Phoenix. One day he suddenly called her at home at sector 12. She used to cover her face in front of her *jeth* (*parda karti thi*). He directly told Lata to withdraw from her trade union life. She, from her *ghoonghat*, replied that he had helped her get this job, but the decision to fight for the cause of the workers was hers'. She would not quit at any cost.

She said ‘*hum ghar chod denge lekin union nehi chodenge.....aap apni bhai ko le jaiye....baccho ko le jaiye....*’

If the male members of the family were exerting pressure on her to quit the life of a trade union leader, Lata got full support and care from her own partner. She describes one small incident that brings out the existence of democratic feelings within one’s own family and community which is deeply patriarchal otherwise. Once Lata was walking on the street accompanied by her husband. The entire staff of the management of the Phoenix were standing on the main road of sector 12. One of them tried to character assassinate her by saying that ‘*Noida ke sare malik jante hain ke Lata Singh raat ko soti hain worker ke beech me...*’ Lata was worried thinking that this allegation was such a stigma (*itna bada kalanqk*) for a woman. But she also assured herself thinking that if she was out at night, her husband always accompanied her. In this case too she got his support. Lata describes this incident as something that made her realized what love is (*payar keya hota hain?*). Does this democratization of feelings part and parcel of the processes through which working class movements develop?

Often her caste identity was used for manipulation.... ‘*are tum to thakurait ki beti ho....*’ Once there was another protest in front of another shoe factory called the Shoe Technique. When the workers were protesting, the superintendent of police of Ghaziabad was present there. Someone from the management, a *brahmin* (with Pandey surname) started saying that Lata, a respected woman of *thakur* (Rajput caste) household should not be seen with these *chamars*. Lata confronted him by saying that the owner of the factory is a Muslim. But just because he is wealthy his identity can be overlooked. She added by saying that ‘*chamar, chura, pasi, muslim main kuch nehi janti.....main janti hu ki main aurat hu; aur is bakht road pe hu; aur majdoor ke sath hu....*’

The possibility of family getting to know about these slanders was a continuous worry for Lata, especially that fact that she was jailed and had to go underground. But once police reached her home back in the village of Jaunpur. Usually in villages of UP, married women were not known by their names. So, no one could recognize when police asked the house of Lata Singh. Only a male relative (*jeth*) knew that her original name is Lata. He tried to persuade Lata to give up her union activities as this incident appeared as *bezaati* for the family.

Expanding Horizon of Working-Class Consciousness: The Experience of Agra Jail

Around 2000-2001, during the ongoing struggle in Phoenix, the workers gave a call for Jail Bharo Andolan. They were taken to Agra jail. A new unit was formed in the sector 60 unit of Phoenix. This development angered the owners and they wanted to closed down the unit and throw the union leaders out. Buses used to get loaded with workers at the dawn and reach the Agra jail at night. Mostly they remained hungry. Many workers spent 3-4 months in jail. Around 3000 workers participated. Almost 58 women workers were jailed. We had to fight inside the jail as well. One pregnant lady worker delivered her baby boy inside the jail in the midnight. The jailor had to open the gate of the prison and doctor was called. It was a day of Hindu festival Janmashtami, so many thought that the boy should be names after Hindu deity Krishna-Kanhaiya. But Lata said that they were revolutionaries (*hum to sangharshi log hain*), a deity had no business there. So, the child was named Jailor.

Confrontation was reaping from the beginning. The workers were taken to the jail in turns and they were hungry. They demanded food; Lata Sigh once again became their voice. Their confrontation with the jail authority started with the demand of ration. After some argument they were given tea and samosa. The women workers put in one cell of the prison. One of them found out that the food given by the jail authorities contained insects. Immediately they started protesting inside jail. The junior jailor was chased by the women prisoners of Phoenix who asked him to mend his way. They threw that rotten food away. The junior jailor screamed at the them saying how dare you waste the food? Lata was called separately. This angered the women workers even more. The women of the trade union were so fierce that the junior jailor did not dare to enter their cell and finally the senior officer arrived at the spot. When the officer agreed to the demand of fresh food for the women workers of Phoenix, Lata once again protested by saying that there were other female prisoners as well (*koi apne damad ko marke ayaa tha, koi kisiko mar ke...matlab buri halath thi*). They could be criminals but altogether there were 250 female inmates. Everyone expects the guarantee of basic rights in jail. So, if fresh food from outside is being arranged, everyone would get it. Those other inmates also joined the protest and refused to eat the food that was given earlier. All the women workers of Phoenix assembled in the open yard (*chaupal*) of the jail but other female inmates were stopped from joining them. But Lata insisted that they should be allowed to come there. The jail authority tried to intimidate Lata

by calling her separately (*Lata Singh ko bulao....aapki himmat kaisi hui khana phikwane ka?*), but all other women workers resisted together '*ladieso ka uss samay thoda tez....ek to CITU ka union banne ke baad kitna tej aajata hai worker o me.....malum raheta hain ki hum hi hum hain...*

Lata spent one month and couple of days in the jail. Her family went to meet her once there but she refused to meet them as she thought that union is looking after all the workers and arranging for their bails, so there was no need of family intervention separately. M K Pandhe came to jail to meet the workers.

Women of Trade Union

According to Lata trade union inculcated a sense of independence, agency and dignity in the women workers. They were up in front in all protest-agitations, facing police brutality, jumping in the dry nalas to hide themselves when bullets were shot. Women used to go for all campaigns. This is true for all the four units of Phoenix. If needed women joined protests or campaign even in mid-night.

One female CITU member and another leader of the Phoenix shoe company called Rajkumari was arrested at mid-night without any female police around during the industrial strike of 1997. It was a violation of the order of the Supreme court. The demands that were put forward by the CITU was based on the directions given by the Supreme court, i.e., for shifting and closure of industries from Delhi should be reviewed, the workers should be paid a minimum wage of Rs.3100/- and some facilities should be provided to jhuggi dwellers who had in fact encroached upon public land . The FIR was lodged by Mr. Chheda Lal Shukla, the director of the M. Plast India Pvt Ltd. Police was clearly at fault. Along with the charge of arson, it was alleged that under the leadership of Rajkumari, a group of workers destroyed property at the factory site of the said company and also caused injury to the employer. The members of the union reached the house of the SHO and threatened him by saying that he would land in trouble for such violation. The SHO Devinder Singh did not have any memo for the arrest. Union fought the case in court. The union argued that the arrest of Rajkumari was illegal and there was no need of doing this in the middle of the night. Many union leaders had cases against them but in the manner in which female leaders were arrested was illegal. The police in its affidavit said that

Rajkumari was arrested in the early hours of 05:30 am in the presence of a female constable, since she used to reach home late at night and again leave at early hours. Against this argument, Kirti Singh, the lawyer of the CITU had to say in court that Rajkumari had no previous record of crime and she belonged to a respectable family. So, this ploy of character assassination of women leaders was used by the management as well as the state.

Women workers of the industrial town had additional difficulties. Their wages were low, they were harassed by the staff of management often which had sexual overtone, lack of cheap and secured conveyance was also problem. All these issues were part of the demands raised by the trade union. There was no provision of maternity leave. The union also demanded that the mothers of infants should get time to breastfeed their children. Struggle of these issues were not only limited to the units of Phoenix alone, rather wherever, CITU had units in Noida, these demands comprised the common agenda. The number of women workers in the industries were also increasing. Keeping these in mind, a women's subcommittee of the CITU was formed.

Lata Singh was the convenor of the Kaamgar Mahila Union of the Delhi state unit of the CITU. She was in the All India Co-ordination Committee for the same for 10-15 years till one year before the death of Bharadwaj. Once the trade union in Noida was initiated with the help of union leaders from Ghaziabad. But Lata emerged as one of the significant women trade unionists whose area of work was equally divided between both the places. When she was underground, she used to stay back at Ghaziabad till late night and someone would drop her back at home.

In all other protests as well, police use to look for the house of Lata and another Janwadi Mahila Samiti (JMS) leader of the region Asha Yadav as there used to be joint struggles. Police has always been merciless in thrashing female workers.

Life After Phoenix: Continuation in Later Struggles

Once the shoe factory was closed, Lata and Gangeshwar were both devoted their lives for building trade union in the industrial town. Noida was no longer part of Ghaziabad district. Rather it came into existence as a sperate district called Gautam Budh Nagar. Joining any other factory was not possible for them. In all the factories and police stations in Noida, their photographs, video clippings/recording of their roles in different protests were widely circulated.

Lata became a member of the Communist Party of India (Marxist) in 1992. Gangeshwar started acting as a whole-time worker of the CITU.

Lata could not. When her husband remained the sole bread-winner of the house. She had to look after children who were mostly living on bread and tea offered by the neighbours in the absence of their mother. This poses a question in front of the trade unions, i.e., how to retain female leadership for long time. Was the economic burden on a discharged or disinherited worker worked in same manner for woman and man? How to accommodate a woman in the trade union along with her domestic responsibilities and role as a care giver? Ultimately, they joined the movement and remained with it fighting against these odds.

Declining the pressure of bribes offered by the owners, administration and local muscle men, Lata continued her life as a trade union leader and organizer which is the repository of dignity and strength of her life. She thinks that if she is known today in Noida, it is only because what she had earned from commitment to the cause of the working class.

Lata is the vice-president of the CITU unit of Gautam Budh Nagar and president of the Gharelu Kaamgar Mahila Union (union of the domestic workers). She had declined to be either the president or secretary in the conference election as she thinks that she envisages her role as an organizer who can devote time for building units and future generations of cadres. Leadership should be entrusted to someone with education. Lata still works amongst the female workers of different factories of Noida.

Looking back at her life as a trade union leader, Lata Singh describes the lives of the working class of the industrial town as one of misery and exploitative. No government of independent India has ever thought about the poverty, working and living condition of the workers. Violation of labour laws and formation of anti-labour laws has always been rampant in all regimes, be it Congress or BJP. During the time of Mayawati, the physical attack on labourers was somewhat checked but all the anti-labour policies had its beginning during her tenure. Now the Yogi government is doing away with all labour laws in UP, but the attempt to do away with labour inspector was first introduced during the tenure of Mayawati. The industrialists could certify about the condition of workers in the factory. There was hardly any commission for wage

revision for all the trades. With the Yogi government in power now and BJP's attempt to bring in labour courts is going to be one deadliest blow for the survival of the working class.

Even today, the workers in Noida receives less minimum wage than the workers of Delhi. While the prices of everyday commodities are going high every day (*mahengai ka maar*). There are many challenges in front of the working-class movement today but Lata says this sheer experience of collective poverty, casualization, and contractual nature (*thekedaari*) of the jobs are making the workers more vulnerable. The trade union movement has to fight against it.

Conclusion:

First of all, the story of Lata Singh challenges the overwhelming propaganda of industrialist class that neo-liberalism ushers in development and modernization for all. It also questions the division between formal and informal sector where in one kind of historiography, workers of the big factories are seen as privileged over the workers of 'informal' sector. The trade unions in Noida had to fight for the basic minimum rights and protection of the labour laws in every factory. The story of their everyday survival inside and outside the factory was no different than the workers working in the set-ups described as informal. Women workers had their won struggles within this larger categorization.

Lata Singh's life and struggle tells us how working-class leaders emerge and grow organically from below along with the movement. As a woman she had to face additional challenges. But when she recalls the past events of her life as trade unionist, it is a collective memory of the trade union. One cannot be dissociated from the other.

ⁱ I have borrowed this concept of 'discharged' or 'disinherited' workers from an essay written by Indrani Mazumdar and Indu Agnihotri where they argue that the phenomenon of closure of industries allowed a kind of parasitic profit for the industrialist class. The workers, on the other hand, out of job are reduced to a vulnerable position, not being able to compete with already existing reserve army of labour. See, Indrani Mazumdar & Indu Agnihotri, 'Labour in Times of Closure' in U. Kalpagam, Nisha Srivastava & D.M. Diwakar (eds.), *Labour and Poverty (Studies on Uttar Pradesh)*, Segment Books, New Delhi, 2004, pp. 361-389.

ⁱⁱ For the reconstruction of the industrial history of Noida see Indrani Mazumdar, 'Export Processing Zones and their Workers in India: Conditions and Framework for Promotion of Social Dialogue'.

ⁱⁱⁱ For the reconstruction of the CITU history in Noida and Ghaziabad, one round of interview was done with K M Tiwari and Gangeshwar Datt Sharma.